DEPARTMENT OF HISTORY

Academic Excellence: Books Authored by Our History Faculty

Dr. Meghna Sharma : keeps a teaching plus research experience of 20 years and is currently working as Assistant Professor (Senior Scale) in the Department of History, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner, Rajasthan. She is also holding charge of the Director, Centre for Museum and Documentation in the same institution. Keeping an outstanding academic record she possesses PG, and Ph.D. degree in History (specialization in Modern Indian History) from Maharishi Dayanand Saraswati University, Ajmer, Rajasthan, India. She was awarded with the prestigious Junior Research Fellowship (JRF) by UGC, New Delhi in year 2003. At present she is Member, Board of Studies in History at MGS University, Bikaner and has organised a number of academic activities like Seminars, Symposiums, Conferences, Extension Lectures, and Educational Tours at National-International levels. She is currently Ph.D. Research Guide with two research scholars under her supervision, two other allotted. One has already been awarded his Ph.D under her able guidance. She has authored 11 books (Authored/Edited/Co-edited) on varied issues like History, Literature and Women Studies with around 55 research papers published in journals and edited books of national, international repute. She has traveled extensively for Conferences, Seminars and Lecture Delivery in India and abroad. She has attended and presented more than 100 research papers in State, National and International Conferences, Seminars and Workshops. She is a recipient of prestigious awards in the sphere of Literature, Women Empowerment etc. She is a life member of Indian History Congress, Rajasthan History Congress and many more academic bodies. She served the University as Founder Director of Centre for Women's Studies for a period of more than four years. Apart from her wide and varied experience she is actively associated with different Socio-cultural organizations. She keeps experience of being the Member, Editorial board of various academic journals. Besides this, she is a Gold Medalist in Journalism and Mass Communications with experience of work in Print as well as Electronic Media She has remained Students Union President at PG Level.

सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर
स्थापित 1964
www.suryaprakashanmandir.com

978-93-92252-43-3 ₹ 1500
available at amazon

WOMEN IN HISTORY

Dr. Meghna Sharma

Social Marginalization of WOMEN IN HISTORY Some Reflections

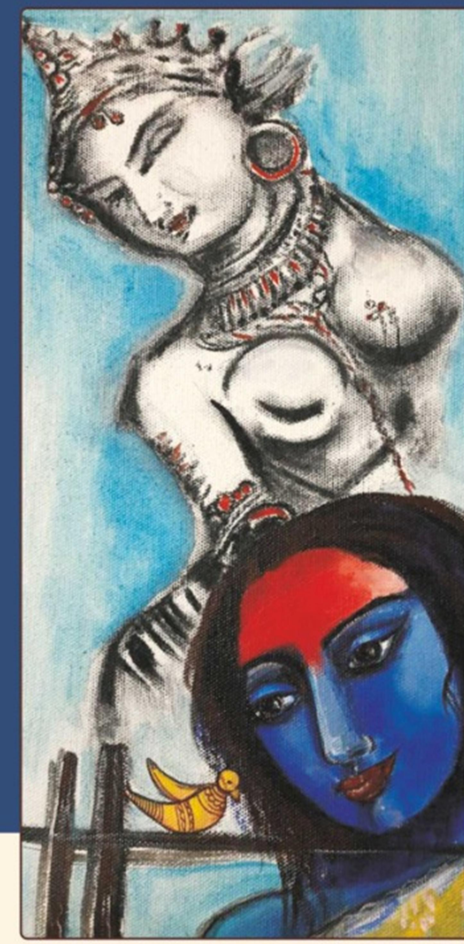

Dr. Meghna Sharma

History of Women's Marginalisation

Literature, Constitution and Remedial Approach

Dr. Meghna Sharma

History of Women's Marginalisation
Literature, Constitution and Remedial Approach

Dr. Meghna Sharma

Dr. Meghna Sharma : keeps a teaching plus research experience of 20 years and is currently working as Assistant Professor (Senior Scale) in the Department of History, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner, Rajasthan. She is also holding charge of the Director, Centre for Museum and Documentation in the same institution. Keeping an outstanding academic record she possesses PG, and Ph.D. degree in History (specialization in Modern Indian History) from Maharishi Dayanand Saraswati University, Ajmer, Rajasthan, India. She was awarded with the prestigious Junior Research Fellowship (JRF) by UGC, New Delhi in year 2003. At present she is Member, Board of Studies in History at MGS University, Bikaner and has organised a number of academic activities like Seminars, Symposiums, Conferences, Extension Lectures, and Educational Tours at National-International levels. She is currently Ph.D. Research Guide with two research scholars under her supervision, two others allotted. One has already been awarded his Ph.D under her able guidance. She has authored 11 books (Authored/Edited/Co-edited) on varied issues like History, Literature and Women Studies with around 55 research papers published in journals and edited books of national, international repute. She has traveled extensively for Conferences, Seminars and Lecture Delivery in India and abroad. She has attended and presented more than 100 research papers in State, National and International Conferences, Seminars and Workshops. She is a recipient of prestigious awards in the sphere of Literature, Women Empowerment etc. She is a life member of Indian History Congress, Rajasthan History Congress and many more academic bodies. She served the University as Founder Director of Centre for Women's Studies for a period of more than four years. Apart from her wide and varied experience she is actively associated with different Socio-cultural organizations. She keeps experience of being the Member, Editorial board of various academic journals. Besides this, she is a Gold Medalist in Journalism and Mass Communications with experience of work in Print as well as Electronic Media. She has remained Students Union President at PG Level.

सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर
स्थापित 1964
www.suryaprakashanmandir.com

978-93-92252-42-6 ₹ 1500
available at amazon

सोमा आनंद रचित छोटी छोटी खुशियाँ शृंखला से उद्धृत

डॉ. मेघना शर्मा

आप बीस वर्षो का उच्च शिक्षण और शोध अनुभव रखती हैं और वर्तमान में इतिहास विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान में सहायक प्रोफेसर (सीनियर स्केल) के रूप में कार्यरत हैं। आप वर्तमान में डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर के साथ साथ डायरेक्टर (सेंटर फॉर म्यूजियम एंड डॉक्यूमेंटेशन), प्रकाशन समिति की संयोजिका हैं। साथ ही आप विश्वविद्यालय के सक्षम निकाय विद्या परिषद की माननीय कुलपति द्वारा नामित सदस्या हैं।

पूर्व में आप सेंटर फॉर विमेन स्ट्डीज की संस्थापक डायरेक्टर, संयोजिका (मीडिया सेल) एवं ड्राइंग एंड पेंटिंग तथा राजस्थानी विभाग के प्रभारी के दायित्व का निर्वहन भी कर चुकी हैं। उत्कृष्ट शैक्षणिक रिकॉर्ड रखते हुए आपके पास पीजी और पीएच.डी. की डिग्रियाँ हैं। आप महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत से इतिहास में पीएच.डी डिग्री (आधुनिक भारतीय इतिहास में विशेषज्ञता) प्राप्त हैं। आपको वर्ष 2003 में यूजीसी, नई दिल्ली द्वारा इतिहास विषय में प्रतिष्ठित जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) से सम्मानित किया गया था। वर्तमान में आप एमजीएस विश्वविद्यालय, बीकानेर में इतिहास में अध्ययन बोर्ड की सदस्य हैं और आपने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार, संगोष्ठी, विस्तार व्याख्यान, अकादमिक भ्रमण, विशेषज्ञ वार्ता जैसी कई शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया है। आप 2015 से इतिहास विषय की पीएच.डी. सुपरवाइजर हैं। आपके निर्देशन में तीन शोधार्थी कार्य कर रहे हैं। आपके कुशल मार्गदर्शन में तीन शोधार्थियों को पीएच.डी डिग्री अवॉर्ड हो चुकी है। आपने इतिहास, साहित्य और महिला अध्ययन जैसे विभिन्न मुद्दों पर 15 पुस्तकें (जिनमें उनके द्वारा लेखन/संपादन/सह-संपादन कार्य किया गया) लिखी हैं। आपके लगभग 55 शोध पत्र राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं व संपादित पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं। आपने भारत और विदेशों में सम्मेलनों, सेमिनारों और व्याख्यान आदि के लिए यात्रायें की है। आपने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों और कार्यशालाओं में 100 से अधिक संगोष्ठियों में भाग लिया और शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं। आप साहित्य, महिला सशक्तिकरण आदि के क्षेत्र में प्रतिष्ठित पुरस्कारों की प्राप्तकर्ता हैं। आप भारतीय इतिहास कांग्रेस, राजस्थान इतिहास कांग्रेस और कई अन्य शैक्षणिक निकायों की आजीवन सदस्या हैं। आपने चार साल से अधिक की अवधि तक महिला अध्ययन केंद्र की संस्थापक निदेशक के रूप में विश्वविद्यालय में सेवाएँ दी हैं। अपने व्यापक और विविध अनुभव के अलावा वह विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों से सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। आपको विभिन्न अकादमिक पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड के सदस्य होने का अनुभव प्राप्त है। इसके अलावा, आप प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में काम करने के अनुभव के साथ पत्रकारिता और जनसंचार में स्वर्ण पदक विजेता हैं। आप स्नातकोत्तर स्तर पर छात्रसंघ अध्यक्ष, सर्वश्रेष्ठ वक्ता के साथ साथ स्कूली जीवन में हाउस वाइस कैप्टन व सर्वश्रेष्ठ छात्रा भी रह चुकी हैं।

लिट्रेरी सर्किल
सी-13, प्रथम तल, खण्डेलवाल गर्ल्स कॉलेज, संसार चन्द्र रोड
जयपुर - 302001, 96606-60333, 94140-5330
Email : literarycirclejpr@yahoo.com

978-93-95533-98-0

इतिहास में संत
संत साहित्य और संत प्रेरणा
डॉ. मेघना शर्मा

इतिहास में संत

संत साहित्य और संत प्रेरणा

डॉ. मेघना शर्मा

आप बीस वर्षों का उच्च शिक्षण और शोध अनुभव रखती हैं और वर्तमान में इतिहास विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान में सहायक प्रोफेसर (सीनियर स्केल) के रूप में कार्यरत हैं। आप वर्तमान में डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर के साथ साथ डायरेक्टर (सेंटर फॉर म्यूजियम एंड डॉक्यूमेंटेशन), प्रकाशन समिति की संयोजिका हैं। साथ ही आप विश्वविद्यालय के सक्षम निकाय विद्या परिषद की माननीय कुलपति द्वारा नामित सदस्या हैं।

पूर्व में आप सेंटर फॉर विमेन स्टडीज की संस्थापक डायरेक्टर, संयोजिका (मीडिया सेल) एवं ड्राइंग एंड पेंटिंग तथा राजस्थानी विभाग के प्रभारी के दायित्व का निर्वहन भी कर चुकी हैं। उत्कृष्ट शैक्षणिक रिकॉर्ड रखते हुए आपके पास पीजी और पीएच.डी. की डिग्रियाँ हैं। आप महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत से इतिहास में पीएच.डी डिग्री (आधुनिक भारतीय इतिहास में विशेषज्ञता) प्राप्त हैं। आपको वर्ष 2003 में यूजीसी, नई दिल्ली द्वारा इतिहास विषय में प्रतिष्ठित जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) से सम्मानित किया गया था। वर्तमान में आप एमजीएस विश्वविद्यालय, बीकानेर में इतिहास में अध्ययन बोर्ड की सदस्य हैं और आपने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार, संगोष्ठी, विस्तार व्याख्यान, अकादमिक भ्रमण, विशेषज्ञ वार्ता जैसी कई शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया है। आप 2015 से इतिहास विषय की पीएच.डी. सुपरवाइजर हैं। आपके निर्देशन में तीन शोधार्थी कार्य कर रहे हैं। आपके कुशल मार्गदर्शन में तीन शोधार्थियों को पीएच.डी डिग्री अवॉर्ड हो चुकी है। आपने इतिहास, साहित्य और महिला अध्ययन जैसे विभिन्न मुद्दों पर 15 पुस्तकें (जिनमें उनके द्वारा लेखन/संपादन/सह-संपादन कार्य किया गया) लिखी हैं। आपके लगभग 55 शोध पत्र राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं व संपादित पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं। आपने भारत और विदेशों में सम्मेलनों, सेमिनारों और व्याख्यान आदि के लिए यात्रायें की है। आपने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों और कार्यशालाओं में 100 से अधिक संगोष्ठियों में भाग लिया और शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं। आप साहित्य, महिला सशक्तिकरण आदि के क्षेत्र में प्रतिष्ठित पुरस्कारों की प्राप्तकर्ता हैं। आप भारतीय इतिहास कांग्रेस, राजस्थान इतिहास कांग्रेस और कई अन्य शैक्षणिक निकायों की आजीवन सदस्या हैं। आपने चार साल से अधिक की अवधि तक महिला अध्ययन केंद्र की संस्थापक निदेशक के रूप में विश्वविद्यालय में सेवाऐं दी हैं। अपने व्यापक और विविध अनुभव के अलावा वह विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों से सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। आपको विभिन्न अकादमिक पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड के सदस्य होने का अनुभव प्राप्त है। इसके अलावा, आप प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में काम करने के अनुभव के साथ पत्रकारिता और जनसंचार में स्वर्ण पदक विजेता हैं। आप स्नातकोत्तर स्तर पर छात्रसंघ अध्यक्ष, सर्वश्रेष्ठ वक्ता के साथ साथ स्कूली जीवन में हाउस वाइस कैप्टन व सर्वश्रेष्ठ छात्रा भी रह चुकी हैं।

सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर
स्थापित 1964
www.suryaprakashanmandir.com

978-93-92252-60-0 ₹ 450
available at amazon

आवरण चित्र : सोमा आनंद

आधुनिक काल में महिला

डॉ. मेघना शर्मा

आधुनिक काल में महिला

वस्तुस्थिति, परिवर्तन और सुधारवादी दृष्टिकोण

डॉ. मेघना शर्मा

डॉ. मेघना शर्मा

आप बीस वर्षों का उच्च शिक्षण और शोध अनुभव रखती हैं और वर्तमान में इतिहास विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान में सहायक प्रोफेसर (सीनियर स्केल) के रूप में कार्यरत हैं। आप वर्तमान में डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर के साथ साथ डायरेक्टर (सेंटर फॉर म्यूजियम एंड डॉक्यूमेंटेशन), प्रकाशन समिति की संयोजिका हैं। साथ ही आप विश्वविद्यालय के सक्षम निकाय विद्या परिषद की माननीय कुलपति द्वारा नामित सदस्या हैं।

पूर्व में आप सेंटर फॉर विमेन स्ट्डीज की संस्थापक डायरेक्टर, संयोजिका (मीडिया सेल) एवं ड्राइंग एंड पेंटिंग तथा राजस्थानी विभाग के प्रभारी के दायित्व का निर्वहन भी कर चुकी हैं। उत्कृष्ट शैक्षणिक रिकॉर्ड रखते हुए आपके पास पीजी और पीएच.डी. की डिग्रियाँ हैं। आप महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत से इतिहास में पीएच.डी डिग्री (आधुनिक भारतीय इतिहास में विशेषज्ञता) प्राप्त हैं। आपको वर्ष 2003 में यूजीसी, नई दिल्ली द्वारा इतिहास विषय में प्रतिष्ठित जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) से सम्मानित किया गया था। वर्तमान में आप एमजीएस विश्वविद्यालय, बीकानेर में इतिहास में अध्ययन बोर्ड की सदस्य हैं और आपने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार, संगोष्ठी, विस्तार व्याख्यान, अकादमिक भ्रमण, विशेषज्ञ वार्ता जैसी कई शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया है। आप 2015 से इतिहास विषय की पीएच.डी. सुपरवाइजर हैं। आपके निर्देशन में तीन शोधार्थी कार्य कर रहे हैं। आपके कुशल मार्गदर्शन में तीन शोधार्थियों को पीएच.डी डिग्री अवॉर्ड हो चुकी है। आपने इतिहास, साहित्य और महिला अध्ययन जैसे विभिन्न मुद्दों पर 15 पुस्तकें (जिनमें उनके द्वारा लेखन/संपादन/सह-संपादन कार्य किया गया) लिखी हैं। आपके लगभग 55 शोध पत्र राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं व संपादित पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं। आपने भारत और विदेशों में सम्मेलनों, सेमिनारों और व्याख्यान आदि के लिए यात्रायें की है। आपने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों और कार्यशालाओं में 100 से अधिक संगोष्ठियों में भाग लिया और शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं। आप साहित्य, महिला सशक्तिकरण आदि के क्षेत्र में प्रतिष्ठित पुरस्कारों की प्राप्तकर्ता हैं। आप भारतीय इतिहास कांग्रेस, राजस्थान इतिहास कांग्रेस और कई अन्य शैक्षणिक निकायों की आजीवन सदस्या हैं। आपने चार साल से अधिक की अवधि तक महिला अध्ययन केंद्र की संस्थापक निदेशक के रूप में विश्वविद्यालय में सेवाऐं दी हैं। अपने व्यापक और विविध अनुभव के अलावा वह विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों से सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। आपको विभिन्न अकादमिक पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड के सदस्य होने का अनुभव प्राप्त है। इसके अलावा, आप प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में काम करने के अनुभव के साथ पत्रकारिता और जनसंचार में स्वर्ण पदक विजेता हैं। आप स्नातकोत्तर स्तर पर छात्रसंघ अध्यक्ष, सर्वश्रेष्ठ वक्ता के साथ साथ स्कूली जीवन में हाउस वाइस कैप्टन व सर्वश्रेष्ठ छात्रा भी रह चुकी हैं।

डॉ. कौशल्या कुमारी निरंतर इतिहास विषय के अध्ययन/अध्यापन व शोध में रत है।

लिट्रेरी सर्किल
सी-13, प्रथम तल, खण्डेलवाल गर्ल्स कॉलेज, संसार चन्द्र रोड
जयपुर - 302001, 96606-60333, 94140-5330
Email : literarycirclejpr@yahoo.com

कोटा राज्य का इतिहास

(19वीं सदी का आर्थिक सामाजिक परिदृश्य)

डॉ. कौशल्या कुमारी   डॉ. मेघना शर्मा

कोटा राज्य का इतिहास
(19वीं सदी का आर्थिक सामाजिक परिदृश्य)
डॉ. कौशल्या कुमारी
डॉ. मेघना शर्मा

डॉ. मेघना शर्मा

आप बाईस वर्षों का उच्च शिक्षण और शोध अनुभव रखती है और वर्तमान में इतिहास विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान में एसोसिएट प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत है। आप वर्तमान में डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर के साथ-साथ डायरेक्टर (सेंटर फॉर म्यूजियम एंड डॉक्यूमेंटेशन), प्रकाशन समिति की संयोजिका का अतिरिक्त प्रभार भी संभाल रही हैं। साथ ही आप विश्वविद्यालय के सक्षम निकाय विद्या परिषद की माननीय कुलपति द्वारा नामित सदस्या है।

पूर्व में आप सेंटर फॉर विमेन स्टडीज की संस्थापक डायरेक्टर, संयोजिका (मीडिया सेल) एवं ड्राइंग एंड पेंटिंग तथा राजस्थानी विभाग के प्रभारी के दायित्व का निर्वहन भी कर चुकी हैं। उत्कृष्ट शैक्षणिक रिकॉर्ड रखते हुए आपके पास पीजी (इतिहास में स्वर्ण पदक प्राप्त) और पीएच.डी. की डिग्रियाँ हैं। आप महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत से इतिहास में पीएच.डी डिग्री (आधुनिक भारतीय इतिहास में विशेषज्ञता) प्राप्त है। आपको वर्ष 2003 में यूजीसी, नई दिल्ली द्वारा इतिहास विषय में प्रतिष्ठित जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) से सम्मानित किया गया था। वर्तमान में आप एमजीएस विश्वविद्यालय, बीकानेर में इतिहास में अध्ययन बोर्ड की सदस्य हैं और आपने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार, संगोष्ठी, विस्तार व्याख्यान, अकादमिक भ्रमण, विशेषज्ञ वार्ता जैसी कई शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया है। आप 2015 से इतिहास विषय की पीएच.डी. सुपरवाइजर हैं। आपके निर्देशन में दो शोधार्थी कार्य कर रहे हैं। आपके कुशल मार्गदर्शन में चार शोधार्थियों को पीएच.डी डिग्री अवॉर्ड हो चुकी है। आपने इतिहास, साहित्य और महिला अध्ययन जैसे विभिन्न मुद्दों पर 17 पुस्तकें (जिनमें उनके द्वारा लेखन/संपादन/सह-संपादन कार्य किया गया) लिखी है। आपके 70 से अधिक शोध पत्र राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं व संपादित पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं। आपने भारत और विदेशों में सम्मेलनों, सेमिनारों और व्याख्यान आदि के लिए यात्रायें की है। आपने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों और कार्यशालाओं में 100 से अधिक संगोष्ठियों में भाग लिया और शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं। आप साहित्य, महिला सशक्तिकरण आदि के क्षेत्र में प्रतिष्ठित पुरस्कारों की प्राप्तकर्ता है। आप भारतीय इतिहास कांग्रेस, राजस्थान इतिहास कांग्रेस और कई अन्य शैक्षणिक निकायों की आजीवन सदस्या है। आपने चार साल से अधिक की अवधि तक महिला अध्ययन केंद्र की संस्थापक निदेशक के रूप में विश्वविद्यालय में सेवाएँ दी है। आपको विभिन्न अकादमिक पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड के सदस्य होने का अनुभव प्राप्त है। इसके अलावा, आप प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में काम करने के अनुभव के साथ पत्रकारिता और जनसंचार में स्वर्ण पदक विजेता है। आप स्नातकोत्तर स्तर पर छात्रसंघ अध्यक्ष, सर्वश्रेष्ठ वक्ता के साथ-साथ स्कूली जीवन में हाउस वाइस कैप्टन व सर्वश्रेष्ठ छात्रा भी रह चुकी है।

डॉ. पूनम चौधरी

आप इतिहास विषय में पीजी, एम.फिल, व डॉक्टरेट हैं साथ ही वर्तमान में इतिहास विषय के अध्ययन व अध्यापन में रत हैं, आपकी दो पुस्तकें आधुनिक इतिहास में अफ़ीम (उत्पादन, व्यापार और नीतियां) व अफ़ीम : इतिहास, सत्ता और समाज प्रकाशित हो चुकी हैं। साथ ही आपने आठ राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में पत्र प्रस्तुतीकरण किया है व आपके चार शोध पत्र प्रतिष्ठित जर्नल्स में प्रकाशित हैं।

अफ़ीम : इतिहास, सत्ता और समाज

डॉ. पूनम चौधरी
डॉ. मेघना शर्मा

अफ़ीम
इतिहास, सत्ता और समाज

डॉ. पूनम चौधरी   डॉ. मेघना शर्मा

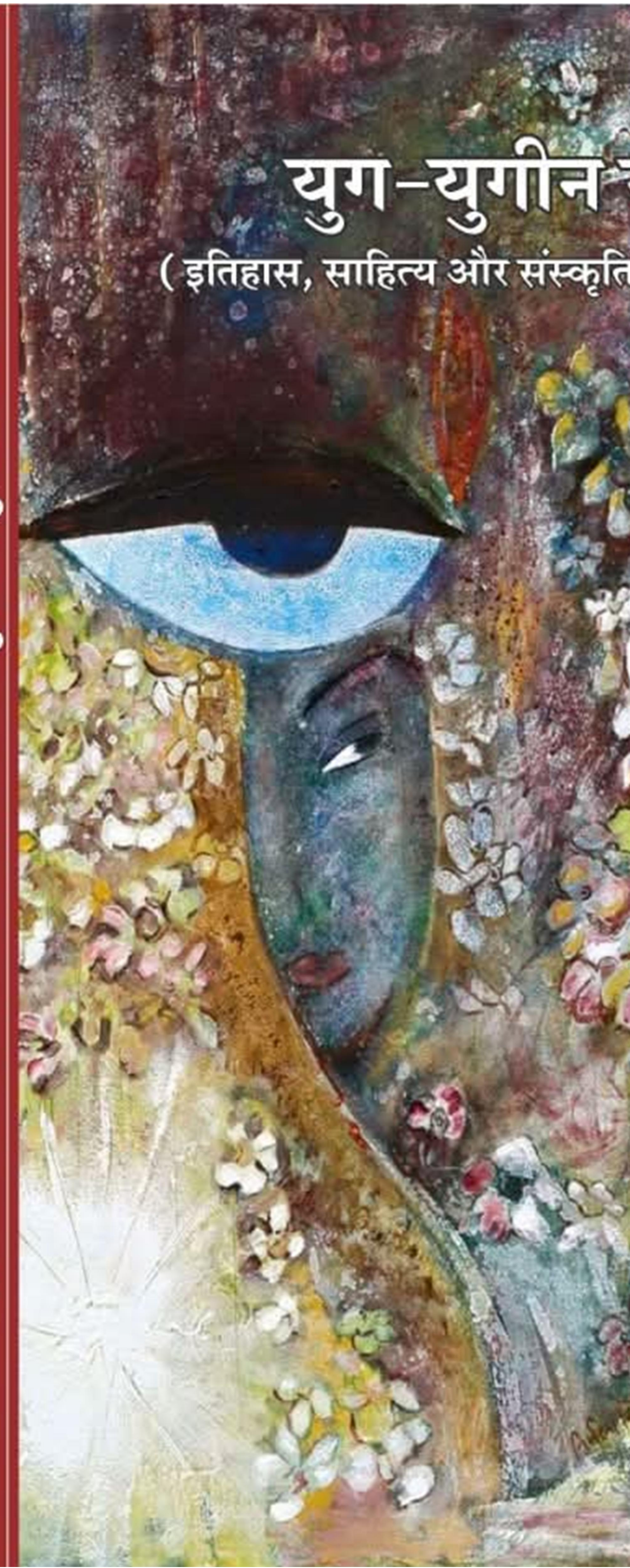

युग-युगीन नारी

(इतिहास, साहित्य और संस्कृति के आइने में....)

प्रधान सम्पादक :
डॉ. मेघना शर्मा

सम्पादक :
डॉ. सीमा शर्मा
डॉ. शशि वर्मा

युग-युगीन नारी
(इतिहास, साहित्य और संस्कृति के आइने में....)
डॉ. मेघना शर्मा
डॉ. सीमा शर्मा
डॉ. शशि वर्मा

9 789380 917573

प्रकाशन विभाग
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय,बीकानेर (राज.)

आप बीस वर्षों का उच्च शिक्षण और शोध अनुभव रखती हैं और वर्तमान में इतिहास विभाग, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान में सहायक प्रोफेसर (सीनियर स्केल) के रूप में कार्यरत हैं। आप वर्तमान में डीन स्टूडेंट्स वेलफेयर के साथ साथ डायरेक्टर (सेंटर फॉर म्यूजियम एंड डॉक्यूमेंटेशन), प्रकाशन समिति की संयोजिका हैं। साथ ही आप विश्वविद्यालय के सक्षम निकाय विद्या परिषद की माननीय कुलपति द्वारा नामित सदस्या हैं।

पूर्व में आप सेंटर फॉर विमेन स्टडीज की संस्थापक डायरेक्टर, संयोजिका (मीडिया सेल) एवं ड्राइंग एंड पेंटिंग तथा राजस्थानी विभाग के प्रभारी के दायित्व का निर्वहन भी कर चुकी हैं। उत्कृष्ट शैक्षणिक रिकॉर्ड रखते हुए आपके पास पीजी और पीएच.डी. की डिग्रियाँ हैं। आप महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान, भारत से इतिहास में पीएच.डी डिग्री (आधुनिक भारतीय इतिहास में विशेषज्ञता) प्राप्त हैं। आपको वर्ष 2003 में यूजीसी, नई दिल्ली द्वारा इतिहास विषय में प्रतिष्ठित जूनियर रिसर्च फेलोशिप (जेआरएफ) से सम्मानित किया गया था। वर्तमान में आप एमजीएस विश्वविद्यालय, बीकानेर में इतिहास में अध्ययन बोर्ड की सदस्य हैं और आपने राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सेमिनार, संगोष्ठी, विस्तार व्याख्यान, अकादमिक भ्रमण, विशेषज्ञ वार्ता जैसी कई शैक्षणिक गतिविधियों का आयोजन किया है। आप 2015 से इतिहास विषय की पीएच.डी. सुपरवाइजर हैं। आपके निर्देशन में तीन शोधार्थी कार्य कर रहे हैं। आपके कुशल मार्गदर्शन में तीन शोधार्थियों को पीएच.डी डिग्री अवॉर्ड हो चुकी है। आपने इतिहास, साहित्य और महिला अध्ययन जैसे विभिन्न मुद्दों पर 15 पुस्तकें (जिनमें उनके द्वारा लेखन/संपादन/सह-संपादन कार्य किया गया) लिखी हैं। आपके लगभग 55 शोध पत्र राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं व संपादित पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं। आपने भारत और विदेशों में सम्मेलनों, सेमिनारों और व्याख्यान आदि के लिए यात्रायें की है। आपने राज्य, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों और कार्यशालाओं में 100 से अधिक संगोष्ठियों में भाग लिया और शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं। आप साहित्य, महिला सशक्तिकरण आदि के क्षेत्र में प्रतिष्ठित पुरस्कारों की प्राप्तकर्ता हैं। आप भारतीय इतिहास कांग्रेस, राजस्थान इतिहास कांग्रेस और कई अन्य शैक्षणिक निकायों की आजीवन सदस्या हैं। आपने चार साल से अधिक की अवधि तक महिला अध्ययन केंद्र की संस्थापक निदेशक के रूप में विश्वविद्यालय में सेवाएँ दी हैं। अपने व्यापक और विविध अनुभव के अलावा वह विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक संगठनों से सक्रिय रूप से जुड़ी हुई हैं। आपको विभिन्न अकादमिक पत्रिकाओं के संपादकीय बोर्ड के सदस्य होने का अनुभव प्राप्त है। इसके अलावा, आप प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में काम करने के अनुभव के साथ पत्रकारिता और जनसंचार में स्वर्ण पदक विजेता हैं। आप स्नातकोत्तर स्तर पर छात्रसंघ अध्यक्ष, सर्वश्रेष्ठ वक्ता के साथ साथ स्कूली जीवन में हाउस वाइस कैप्टन व सर्वश्रेष्ठ छात्रा भी रह चुकी हैं।

सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर
स्थापित 1964
www.suryaprakashanmandir.com

978-93-92252-63-1 ₹ 450
available at amazon

आवरण चित्र : सोमा आनंद

आधुनिक इतिहास में अफीम : उत्पादन, व्यापार और नीतियाँ

डॉ. मेघना शर्मा

आधुनिक इतिहास में अफीम

उत्पादन, व्यापार और नीतियाँ

डॉ. मेघना शर्मा

Women in Modern India

Post 1857 to Partition Trauma

Dr. Meghna Sharma

Dr. Meghna Sharma She keeps a teaching plus research experience of 20 years and is currently working as Assistant Professor (Senior Scale) in the Department of History, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner, Rajasthan. She is also holding charge of the Dean Students' Welfare, Director, Centre for Museum and Documentation in the same institution. She is also the VC nominee in the University Academic Council at present. Besides, she has been holding additional charge as Incharge, Media Cell in the past. At present she holds charge of Convener, Publication Cell of the University as well. Keeping an outstanding academic record she possesses PG, and Ph.D. degree in History (specialization in Modern Indian History) from Maharishi Dayanand Saraswati University, Ajmer, Rajasthan, India. She was awarded the prestigious Junior Research Fellowship (JRF) by UGC, New Delhi in 2003. At present she is Member, Board of Studies in History at MGS University, Bikaner and has organised a number of academic activities like Seminars, Symposiums, Talks Conferences, Extension Lectures, and Educational Tours at National-International levels. She is currently Ph.D. Research Guide with three research scholars under her supervision. Three scholars have already been awarded their Ph.D Degrees under her able guidance. She has supervised more than 50 Case Studies in the subject of History as MA Dissertation. She has authored 15 books (Authored/Edited/Co-edited) on varied issues like History, Literature (Poems, Stories etc.) and Women Studies with around 55 research papers published in journals and edited books of national, international repute. She has traveled extensively for Conferences, Seminars and Lecture Delivery in India and abroad. She has attended and presented more than a hundred research papers in State, National and International Conferences, Seminars and Workshops. She is a recipient of prestigious awards in the sphere of Literature, Women Empowerment etc. She is a life member of the Indian History Congress, Rajasthan History Congress and many more academic bodies. She served the University as Founder Director of Centre for Women's Studies for a period of more than four years. Apart from her wide and varied experience she is actively associated with different Socio- cultural organizations. She keeps experience of being the Member, Editorial board of various academic journals. Besides this, she is a Gold Medalist in Journalism and Mass Communications with experience of work in Print as well as Electronic Media. She has remained Students Union President at PG Level. Has been the recipient of Best Student of the School award at school level.

सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर
स्थापित 1964
www.suryaprakashanmandir.com

978-93-92252-62-4 ₹ 1100
available at amazon

आवरण चित्र : सोमा आनंद

Women in Modern India
Dr. Meghna Sharma

last page spine

last page

front page

front page spine

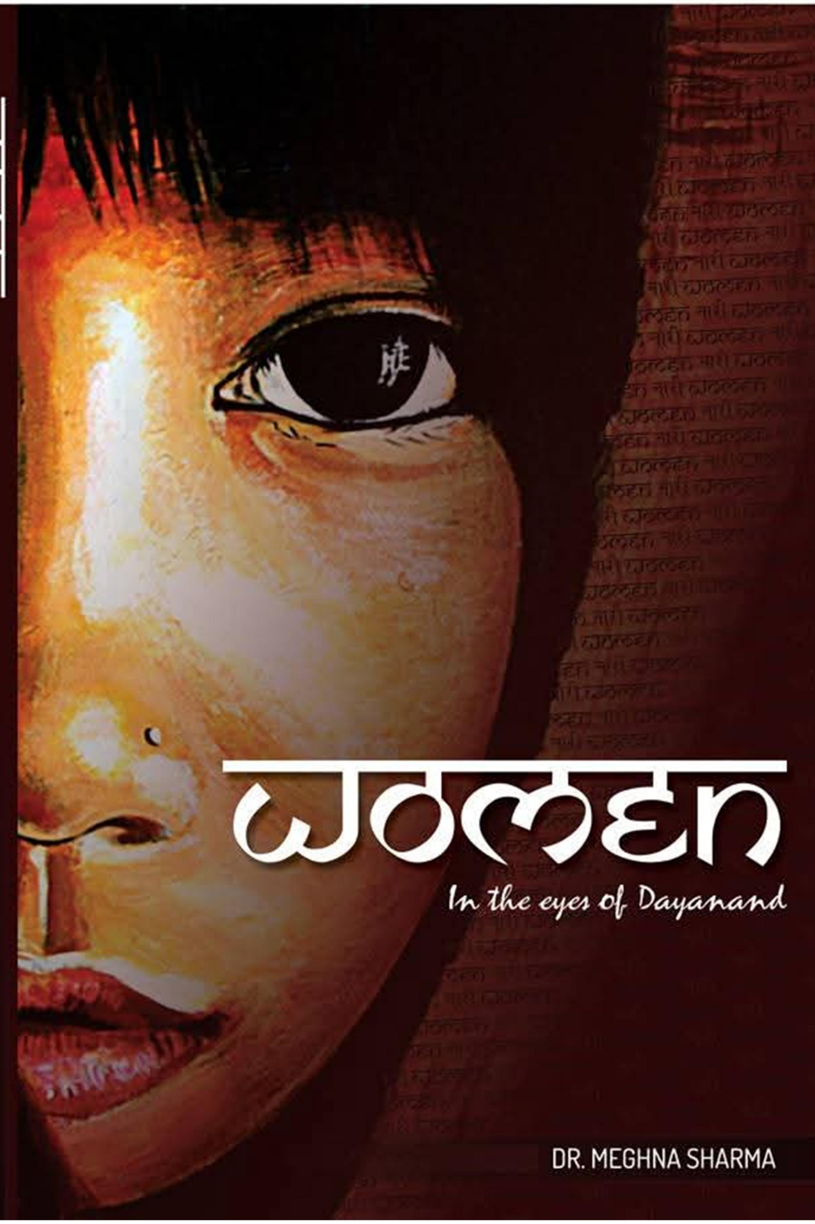

Women *In the eyes of Dayanand*

DR. MEGHNA SHARMA

Dr. Meghna Sharma
Faculty in Humanities and Social Sciences
Department of History
Maharaja Ganga Singh University
NH-15, Jaisalmer Road, Bikaner-04 (Raj.) India

Gold Medalist in History, Dr. Meghna Sharma is at present working as **Assistant Professor, at the Department of History, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner.** Keeping an experience of eleven years in the spheres of higher education and research, she has **edited monthly Newsletters/Journals and Souvenirs, has under her credit, over 30 research publications at International/ National level.** She has been awarded in the past by University Grants Commission, New Delhi, with **Junior Research Fellowship in History. (2003)** and has served as **UGC-Fellow** for five years in the Department of History, Maharishi Dayanand Saraswati University, Ajmer, Rajasthan (2003-2008).

Dr. Meghna has **delivered lectures in universities abroad, specially Bangkok in Thailand (2013),** on subjects relating to **"Women"** and others, besides making presentations on issues of global concern at international level several times.

Besides teaching, she has also lead the Girls' NCC Battalion under the capacity of **NCC-Caretaker** (2009-10).

In the field of literature, her **poems have published by Rajasthan Sahitya Academy (Udaipur, Rajasthan)** and other renowned

... Cont. on last page spine

publications at national level. **Prasaar Bharti (Akaashwani, Jaipur) has been broadcasting her poems** in her own voice in the year 2009. Awarded with **"Hindi Sevi Sammaan"** in the field of literature, she has under her credit many **Science Fiction Stories published at national level with awards by the Government of India in Fiction writing for Transmission Mediums.**

Also a **Gold Medalist in Journalism and Mass Communications** she has worked as **News Anchor** for renowned channels in electronic media besides keeping an experience of **Live Stage Anchoring, for a span of past twelve years** at various government/private functions, for dignitaries including the President of India/Cabinet Ministers/World fame Celebrities/State Ministers/Governors and Academicians of India-wide fame, and have been awarded for the same by the then **Vice-President of India, Lt. Shri Bhairon Singh Shekhawat** and several other institutions too.

Felicitated by several academic/literary/ cultural organizations **Dr. Meghna has been working for women issues** for past 16yrs and also the spread of secular ideology, remaining associated with the social activities of various NGO's. Besides she has **contributed articles in daily newspapers and other magazines as well.**

She keeps an experience of teaching & Research in three state University of Rajasthan.

In student life, Dr. Meghna has remained the **Student's Union President** at Post Graduate Level (2001-02), held key positions as office bearer (House Vice-Captain) at school level too and is a winner of a number of awards as **"Best Student", "Best Orator", Best Debator", Best Speaker"** and others at Intercollege level.

(Dr. Meghna Sharma)

Seven Facets of Women (Past and Present)-is a comprehensive piece of work upon the women of India and worldwide, whether it comes to the condition of women in colonial period/regime or the present times when women is working, shouldering double responsibility of an earning member and home-maker both, at the same time. The book is an edited work of my articles upon "women", out of which, some got place in renowned international journals, others were my lectures in prestigious conferences or seminars relating to global issues like world peace and gender studies.

The nineteenth century reformists looked to improving the condition of women as the most important aspect of social reform as it is the status of the women which define the progress and growth chart of any society. The major reformist amongst them were Swami Vivekananda and Swami Dayanand Saraswati ; who not only blew the bugle of women empowerment in the nineteenth century but also took some major steps for spreading the campaign through their letters and journals . Vivekananda spreaded this ideology even cross borders and also gained significant success through his efforts.

In the coming centuries i.e the twentieth and twenty first centuries, women, breaking the shackles of orthodoxy traditions came out and started working in the outside world, but there numberless hazards which they had to face due to traditional male dominating outlook and patriarchal societal structures. Even in countries outside India, working women had to face sever problems which I have tried to mention in the article depicting the hazards and challenges of working women, giving examples of some countries. Women besides shouldering also took genuine steps and contributed towards spreading the idea of global peace and harmony which have been described in a separate article.

Dayanand Saraswati also tried for political awareness of women, besides social and cultural spheres, but the role of women in polity was also hindered regularly by male dominance and they were either considered 'very soft' when they were 'feminine' but on the other hand 'very harsh and cruel' and also sometimes 'unfeminine' when they took hard steps or actions in their working patters.

Largely it could be said that at decision tables women are still considered to be the second grade citizens worldwide, this is the conclusion drawn out by the researchers and even feminist workers, surveyors etc.

In Indian judiciary, particularly still visible, make dominance rules, when it comes to deliverance of justice in harassments cases like rape, dowry or other kind of domestic violence so justice deliverance sometimes seems to be a myth and not reality. Even after several resolutions and regulations have been passed, the condition of women is still to be improved and the process of empowerment has to be taken into consideration seriously.

Contact : drmeghnasharma79@gmail.com

Dr. Meghna Sharma

Education :

B.A, Bachleor's in Journalism and Mass communication ((**BJMC**) -Gold Medal, 2008), **M.A**-History (Gold Medal, 2002), Masters in Journalism and Mass communications (**MJMC**), **UGC-NET, J.R.F** (2003), **S.R.F** (2006), **Ph. D** (History, 2010)

Work Experience :

- Keep an experience of twelve years of Teaching plus Research in Three State Universities of Rajasthani, i.e M.D.S University (Ajmer), M. L. S. University (Udaipur), and presently at M.G.S. University (Bikaner, Rajasthan)
- Served as UGC-Fellow for five years at Maharishi Dayanand Saraswati University, Ajmer, Rajasthan (2003-2008).
- Experience of being the NCC Caretaker of the Girls' Battalion, Event Manager and News Anchor for Electronic Media.
- Working for women issues for past 18 years, she has delivered several lectures in National Commission for Women (NCW) Workshops and Conferences, as a social worker.
- Coordinated/convened a vast numbers of Programmes/Events, for a several dozens of organizations and Institutions nationwide.

Visits Abroad :

- Delivered Lectures in Various Universities of Bangkok, Thailand as Visiting Professor (2013)

Publications :

(A) Authored works :

- Women-In The Eyes of Dayanand, 2014. (Reference book of History and Gender Studies)
- Maa Hoti Hun Jab....2015 (Hindi Poetry Collection)
- Rishton ki Vasiyat (Hindi Story Collection)

(B) Edited Works/Other Publications/Broadacasts :

- Edited bi-monthly newspaper, monthly Newsletters/Journals, Soveniers, and has under her credit Research publications at International/National level.
- Poetries/Articles/Stories published in various National/International Magazines like Madhumati, Udaipur, Rajasthan, Nai Sadi ke Shreshth Rachnakar, Duniya in Dino, Shreshth Kavya Sangam, Naari Chetna ki Awaaz, Bharat ke Pratinidhi hastaakshar, Eikeesvin Sadi ki Shreshth Kavitayein (New Delhi), Katharang, Dainik Yugpaksh (Bikaner) and also in daily newspapers of national repute.
- Science Fiction Stories published in Vigyankatha (Faizabad, Uttar Pradesh), and other edited books.
- Poems have been Broadcasted in own voice from Prasar Bharti, Jaipur Station (2009)
- Worked as News Anchor for Electronic Media besides keeping an experience of Live Stage Anchoring of past 14 Years.

Felicitations/Awards/Honours :

- Awarded with Junior Research Fellowship (UGC-JRF) by University Grants Commission, New Delhi (2003) in History.
- Awarded by Government of India Enterprise for Science Fiction Writing for Transmission Mediums (Akaashwani), Ajmer, Rajasthan (2002)
- Felicitated with "Hindi Sevi Samaan" for her contribution in the field of literature by a national level publication, New Delhi. (2015)
- Felicitated by dozens of organizations/Institutions for contribution in Media, social work, Academics and co-coordinating events with live stage anchoring.

In Student Life, remained Students' Union President at Post Graduate Level (2001-02), Held key positions as House Vice-Captain at school level and is a winner of a umber of awards as "Best Student", "Best Orator", "Best Debator", "Best Speaker" and others at Intercollege level.

Present Position :

- Dr. Meghna Sharma is presently working as Assistant Professor in the Department of History, Maharaja Ganga Singh University, Bikaner, Rajasthan.

Seven Facets of Women Dr. Meghna Sharma

रचनाकार पर एक दृष्टि...

[illegible]

– अशोक चक्रधर

[illegible]

– ओमीश परुथी

[illegible]

– मधु आचार्य 'आशावादी'

[illegible]

– डॉ. सुधीर सक्सेना

[illegible]

– कृष्णकांत शर्मा

डॉ. मेघना शर्मा

स्नातकोत्तर इतिहास (स्वर्ण पदक),
पत्रकारिता एवं जनसंचार (स्वर्ण पदक)
यू.जी.सी. नेट, जे.आर.एफ., एस.आर.एफ.,
पी.एच.डी. (इतिहास)

चर्चित स्त्री-विमर्शकार और सामाजिक विषयों पर गहन चिंतन करने वाली महत्वपूर्ण विचारक के रूप में ख्यात मेघना शर्मा ने नॉर्थ ईस्ट हिस्ट्री एसोसिएशन, शिलांग (मेघालय), एकेडमी ऑफ वेल बीइंग सोसायटी, उदयपुर, राजस्थान, शोधक (जयपुर) अंतरा परिवार, भोपाल (मध्यप्रदेश), वर्ल्ड पीस मूवमेंट ट्रस्ट, मेरठ (उत्तरप्रदेश) आदि संस्थाओं से सक्रिय सम्बद्धता के साथ-साथ अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं से जुड़कर स्त्रियों के संघर्ष को गति दी और सामाजिक कार्यों में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। कई संस्थाओं की आजीवन सदस्या होते हुए उनके सम्बद्ध रहकर साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न मेघना शर्मा ने इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस एवं राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस की सक्रिय सदस्य रहते हुए प्रांतीय-राष्ट्रीय संगोष्ठियों में नई सोच से सम्बन्धित विचारों को इतिहास, समाज अध्ययन तथा स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महिला आयोग द्वारा प्रायोजित कार्यशालाओं में स्त्री विषयक व्याख्यान सहित इतिहास के अलावा सम-सामयिक सामाजिक विषयों पर राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पत्र वाचन और उनके प्रकाशन के साथ-साथ अनेक राष्ट्रीय मंचों के अतिरिक्त मेघना शर्मा ने बैंकाक (थाईलैण्ड) के कई विश्वविद्यालय में व्याख्यान देकर भारत का प्रतिनिधित्व किया। इसके अलावा आपने सांप्रदायिक सद्भाव, नारी विमर्श, ऐतिहासिक विषयवस्तु व पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर अनेक विश्वविद्यालयों व संस्थानों में आयोजित कान्फ्रेंसों में व्याख्यान दिए हैं। साथ ही समाचारपत्र/पत्रिकाओं में सम्पादन का अनुभव। कई राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं के सम्पादक मण्डल की सदस्या। आकाशवाणी से कविताओं का प्रसारण। लगभग डेढ़ दशक से सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों के मंच संचालन में राष्ट्रीय ख्याति।

प्रकाशन :

"कुम्भ : इन द आईज ऑफ दयानन्द" – इतिहास व नारी विमर्श विषयक पुस्तक, (जोधपुर, राजस्थान); "जब होती हूं जब..." काव्य संग्रह, (बीकानेर, राजस्थान), [illegible]

[illegible] अंकों आदि में कविता, कथा, लेख एवं कहानियों का प्रकाशन।

साहित्य के क्षेत्र में पुरस्कार/सम्मान :

शंभु शेखर राजस्थानीय विशिष्ट साहित्य पुरस्कार (2016); नारी गौरव सम्मान-नई दिल्ली (2016), [illegible] सम्मान-सुल्तानपुर 2016, भगवानदास किराडू "नवीन आलोकता" बीकानेर (2016), साहित्य सम्मान – रोटरी क्लब बीकानेर मिडटाउन बीकानेर (2016), श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान- नई दिल्ली (2015); हिन्दी सेवी सम्मान – नई दिल्ली (2013), विज्ञान कथा लेखन पुरस्कार, भारत सरकार उपक्रम, अजमेर (2001)।

वर्तमान सम्प्रति :

अपने बहुआयामी कार्यों के लिये प्रतिबद्ध मेघना शर्मा महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान) में इतिहास की व्याख्याता हैं।

रफ़ू की हुई ज़िन्दगी   डॉ. मेघना शर्मा

मेघना शर्मा की कविताएं - सृजन प्रकृति की नैसर्गिक प्रक्रिया है – यह सृष्टि के प्रत्येक प्राणी में अंतर्निहित रहती है। मनुष्य की सृजनशीलता इसी अर्थ में विलक्षण मानी जाती है कि वह उस सृजन में अपनी मनोसृष्टि रखते हुए उसे और बेहतर बनाने का प्रयत्न करती है। रचनाकार जिस वस्तुजगत में अपने जीवन का आधार पाता है, उस जीने की प्रक्रिया में बहुत कुछ कटा-फटा भी पाता है, लेकिन उसी चिथड़े-चिंदियों को सहेज-संवार कर वह उस रफ़ू ज़िन्दगी को और बेहतर बनाने का उद्यम करता है। [illegible]

[illegible]

– नंद भारद्वाज

रिश्तों की वसीयत

डॉ. मेघना शर्मा

डॉ. मेघना शर्मा इतिहास की प्रवक्ता हैं किन्तु स्त्री–अस्मिता के लिए वर्षों से संघर्ष करती आ रही हैं। इन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती के कृतित्व के विभिन्न पक्षों पर काम करके नारी–जागरण में उनके अवदान को रेखांकित करने का भी महत्वपूर्ण काम किया है। इसके अतिरिक्त इनकी ख्याति एक ऐसी कवयित्री की भी है जिनकी कविताओं ने समकालीन हिन्दी काव्य–परिदृश्य में अपनी नई संवेदना और भंगिमा से वृहदतर पाठक समाज का ध्यान आकृष्ट किया है। उनका हाल ही प्रकाशित काव्य संग्रह 'माँ होती हूँ जब' की कविताओं और उन पर हुए विमर्शों ने हिन्दी कविता में उनकी महत्ता को सूचित किया है।

आश्चर्य की बात है कि अब मेघना शर्मा अपने पहले कहानी संग्रह 'रिश्तों की वसीयत' के साथ उपस्थित हुई हैं। इस पहले संग्रह में ही मेघना ने ऐसी कहानियाँ दी हैं जो अपने विन्यास में हमें विस्मित करती हैं। इन कहानियों में शिल्प का चमत्कार नहीं है और न ही अबूझ रहस्यों में ले जाने की चतुरता। इनमें सहज भाषा में सीधे मन पर उतरनेवाली किस्सागोई है जिसमें हमारे समय और समाज का यथार्थ अपनी विडंबनाओं के साथ उभरता है। इनमें एक तरफ भारतीय आजादी और सुराज पर प्रश्न हैं जिनमें गरीब और बेबस जिन्दगियों के लिए कोई जगह नहीं है तो दूसरी तरफ गरीबी में भी अपने स्वाभिमान के साथ जीने और तनकर खड़े रहनेवाले चरित्रों की पहचान है।

संग्रह की अनेक कहानियाँ भौतिक समृद्धि पर वैयक्तिक चाह और स्वतंत्रता को तरजीह देकर एक ऐसे मानवीय मूल्य को प्रतिष्ठित करती हैं जो आज की आपाधापी से भरे यंत्रवत् जीवन में कहीं खो–सा गया है। जीवन की सार्थकता इसी में है कि वह निराश्रित लोगों की साँसों का आधार बन सके। इस आशय की कहानी भी संकलन में है तो बाल मजदूरों के शोषण से अपनी जिन्दगी सँवारनेवाले क्रूर लोगों की शिनाख्त भी है। इसके अतिरिक्त अपने ही माँ–बाप के स्वार्थों की भेंट चढ़ती बेटियाँ, अपनी दीनता में निष्प्राण कठपुतलियों को भी संवेदित करते निरीह कलाकार और हवस की चाह में ब्याहता बननेवाली युवतियाँ इस संकलन में अपनी आवाज सुनती हैं–उनकी आह में हम अपनी व्यथा भूल जाते हैं और एक ऐसे समय में प्रवेश कर जाते हैं जिसे जीते तो हैं पर जिन्हें अक्सर अनदेखा–अनसुना करते हैं। यह कहानियाँ अनेक

स्तरों पर अपनी सहजता और सादगी में छुपी व्यथा में हमें ले जाती हैं और हम वेदना से भर उठते हैं।

कहानी जीवन के मर्म को पकड़ने की विधा है जो किसी घटना के माध्यम से प्रस्तुत होती है। मेघना शर्मा की कहानियाँ अपनी संरचना में छोटी हैं पर सम्प्रेषण की बारीकी और चारित्रिक विचिकित्सा के स्तर पर व्यंजकता का उदाहरण बनकर आती हैं। इन कहानियों का सबसे बड़ा वैशिष्ट्य यह है कि इनके चरित्र, घटनाएँ, संवाद और चुप्पियाँ हमारी स्मृति में बैठ जाती हैं गोया वे हमारे ही जीवन का हिस्सा हों। 'रेड लाईट' का गरीब नन्दू अपनी बहन और माँ की भूख मिटाने को उद्यत दिखता है तो 'मालती मछुआरिन' की मालती अपाहिज हो चुके पति के बावजूद अपनी अस्मिता की लड़ाई लड़कर जीत जाती है। 'रिश्तो की मिट्टी' का श्रीकांत अपने बेटे शौर्य को व्यापारी नहीं बना पाता और वह अपनी निजता को चुनकर मूर्तिकार बनता है। इसी तरह 'रिश्तों की वसीयत' की निःसंतान अग्निहोत्री दम्पत्ति अपनी सम्पत्ति वृद्धों की संस्था को सौंप देती है तो 'रघु चुड़ीवाला' का रघु बाल मजदूरी के खिलाफ संघर्ष करता है। 'पैसेंजर ट्रेन' की शुचि का आत्मसंघर्ष और अपने ही माँ–बाप के स्वार्थ में खो जाना हो या 'और कठपुतली चल पड़ी' के लिछमी और गोविन्द की दारुण व्यथा हो–यह कहानियाँ हमें आंदोलित कर देती हैं। इसी तरह 'साहिल सुलताना का' की सुल्ताना उन बेटियों की आवाज बनकर आती है जो जबर्दस्ती अय्याशों की दूसरी बीवियाँ बनकर दाईयों की तरह काम करने को विवश हो जाती हैं। सुलताना को ऐसे पति से छुटकारा चाहिये, वह अपना वजूद खुद बना सकती है और बनाती है।

आशय यह कि 'रिश्तों की वसीयत' के चरित्र, इसकी कथा, कथ्य में विन्यस्त घटनाएँ और हमारे समाज के सच को व्यक्त करते इनके संघर्ष हमारे मन पर उतर जाते हैं। कहना न होगा कि मेघना शर्मा का यह कहानी संग्रह समकालीन हिन्दी कहानी के परिदृश्य में नई हवा की तरह आता है जिसका स्वागत किया जाना चाहिये।

डॉ. ज्योतिष जोशी
(नई दिल्ली)

डॉ. मेघना शर्मा

स्नातकोत्तर इतिहास (स्वर्ण पदक),
पत्रकारिता एवं जनसंचार (स्वर्ण पदक)
यू.जी.सी. नेट, जे.आर.एफ., एस.आर.एफ.,
पी.एच.डी. (इतिहास)

चर्चित स्त्री–विमर्शकार और सामाजिक विषयों पर गहन चिंतन करने वाली महत्वपूर्ण विचारक के रूप में ख्यात मेघना शर्मा का जन्म नीमच (मध्यप्रदेश) में हुआ, इन्होंने आधुनिक भारतीय इतिहास में स्नातकोत्तर सहित डॉक्टरेट की उपाधि अर्जित की। अनेक संस्थाओं यथा –नॉर्थ ईस्ट हिस्ट्री एसोसिएशन, शिलांग (मेघालय), एकेडमी ऑफ येल बीग सोसायटी, उदयपुर, राजस्थान, शोधक (जयपुर) अंतरा पत्रिका, भोपाल (मध्यप्रदेश), वर्ल्ड पीस मूवमेण्ट ट्रस्ट, मेरठ (उतरप्रदेश)आदि संस्थाओं से सक्रिय सम्बद्धता के साथ–साथ इन्होंने अनेक स्वयसेवी संस्थाओं से जुड़कर स्त्रियों के संघर्ष को गति दी और सामाजिक कार्यों में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। कई संस्थाओं की आजीवान सदस्या होते हुए उनको सम्बद्ध रहकर साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न मेघना शर्मा ने इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस एवं राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस की सक्रिय सदस्य रहते हुए प्रांतीय –राष्ट्रीय संगोष्ठियों में नई सोच से सम्बन्धित विचारों को इतिहास, समाज अध्ययन तथा स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महिला आयोग द्वारा प्रायोजित कार्यशालाओं में स्त्री विषयक व्याख्यान सहित इतिहास के अलावा सम–सामयिक सामाजिक विषयों पर राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पत्र वाचन और उनके प्रकाशन के साथ–साथ अनेक राष्ट्रीय मंचों के अतिरिक्त मेघना शर्मा ने बैंकाक (थाईलैण्ड) के कई विश्वविद्यालय में व्याख्यान देकर भारत का प्रतिनिधित्व किया।

इसके अलावा आपने सर्वधर्म समभाव, नारी विमर्श एतिहासिक विषयवस्तु व पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जे.एन.यू.), नई दिल्ली, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर व जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर इत्यादि संस्थानों में आयोजित कॉन्फ्रेसों में व्याख्यान दिए है। साथ ही समाचार पत्र/पत्रिकाओं में सम्पादन का अनुभव। कई राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं के सम्पादक मण्डल की सदस्या।

प्रकाशन :

1. ''वुमन : इन द आईज ऑफ दयानन्द'' – इतिहास व नारी विमर्श विषयक पुस्तक, (जोधपुर, राजस्थान)
2. ''मां होती हूं जब...'' काव्य संग्रह, (बीकानेर, राजस्थान)
3. सेवन फेसेट्स ऑफ वूमनः पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट (स्त्री विमर्श आधारित पुस्तक), बीकानेर (राज.)
4. मधुमती, राजस्थान साहित्य अकादमी (उदयपुर) नई सदी के श्रेष्ठ रचनाकार, प्रेमाभिव्यक्ति (नई दिल्ली), दुनिया इन दिनों (नई दिल्ली), भारत के प्रतिनिधि हस्ताक्षर (नई दिल्ली), श्रेष्ठ काव्य संगम (नई दिल्ली), नारी चेतना की आवाज (नई दिल्ली), इक्कीसवीं सदी की श्रेष्ठ कविताऐं (नई दिल्ली) दैनिक युगपक्ष, (बीकानेर) विज्ञानकथा (फैजाबाद, यू.पी.) कथारंग, (बीकानेर) एवं दैनिक समाचार पत्रों के रविवारीय विशेष अंकों आदि में कविता, कथा, लेख एवं कहानियों का प्रकाशन।

आकाशवाणी से कविताओं का प्रसारण। लगभग डेढ दशक से सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों के मंच संचालन में राष्ट्रीय ख्याति। अपनी वैचारिक पुस्तक ''वुमन : इन द आईज ऑफ दयानन्द'' जैसी विचारोत्तेजित करने वाली पुस्तक की लेखिका के रूप में चर्चित मेघना शर्मा को अनेक फेलोशिप तथा सम्मान मिले है जिनमें इतिहास में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) की फैलोशिप 2003, भारत सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यशाला रेडियो माध्यम के लिये विज्ञान गल्प लेखन में सम्मान (2002) तथा स्त्री संघर्षों को स्वर देने वाली कवयित्री के रूप में प्राप्त ''हिन्दी सेवी सम्मान'' (नई दिल्ली) प्रमुख है।

अपनी वैचारिकता, अधुनातन इतिहास की नवीनतम समझ और प्रखर वक्ता के रूप में चर्चित मेघना शर्मा महत्वपूर्ण कवयित्री भी हैं जिनकी हाल ही मे प्रकाशित संग्रह 'मां होती है जब...' की कविताएँ अपनी व्यंजनात्मक पदावली और संवेदनात्मक सघनता के कारण बहुत प्रभावित करती है। अपने बहुआयामी कार्यों के लिये प्रतिबद्ध मेघना शर्मा महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान) में इतिहास की व्याख्याता है।

रिश्तों की वसीयत

डॉ. मेघना शर्मा

स्त्री के नाते कवयित्री ने अपने जीवन में देखे और जिये दु:ख को व्यक्त नही किया है या उसके दंश को झेला नही है। यह वास्तविकता है कि अपने निपट एकांत में मेघना शर्मा ने अपनी कविताओं में जिस असहनीय वेदना, अनाचार और भारतीय समाज में स्त्री होने के दु:ख को व्यक्त किया है, उसमें स्त्री के अनेक अँधेरे कोनों को उजागर करने के अतिरिक्त पुरूष सत्ता के अनाचारी और आक्रामक छवि से हमारी मुठभेड़ की सामर्थ्य है - 'बीतते जाते दिन महीने साल/घंटे पहर पल भी एक-एक कर/बीतती जाती देह भी/पर नही बीतती स्मृतियाँ/नही गुजरते वे क्षण त्रासद/जो भारी पड़ते हैं अस्तित्व पर।'

इन काव्यांशों में मेघना शर्मा एक ऐसी प्रखर कवयित्री के रूप में सामने आती हैं जिनमें समकालीन कविता का ओज तो है ही, वह अन्तर्दृष्टि भी है जो अपने समय के यथार्थ को भेदती है और सच कहने का साहस करती है - 'जगाओ अपने भीतर की आग/व्यर्थ की आशा में नष्ट न करो समय/तय करो कि फिर होना है खड़ा/छूना है शिखर पर्वतों के वही अर्थ यहाँ नहीं है जो चलन में है...' अपने अस्तित्व को/अकेले समेटती औरत/यकीन का दूसरा अर्थ जानती है/जो नहीं है शब्दकोश में।'

एक भारतीय स्त्री की वेदना, तड़प, स्वप्न, संघर्ष और अपनी मुक्ति की खोज का यह संग्रह उस मातृत्व की भी याद दिलाता है जिसमें समूचा संसार स्त्री की ममता में शामिल हो जाता है। एक शिशु केवल एक संतति नहीं होता वरन् भारतीय स्त्री के अस्तित्व का दूसरा रूप होता है - उसकी लरजती आवाज उतरती है जब भी भीतर/पुलक उठता है रोम-रोम/आँखों से झर उठते हैं पराग/लहर-सी उठती है अचानक/महसूस होता है तब/तब अपने ही अस्तित्व में दूसरे अस्तित्व की उपस्थिति।'

कहना न होगा कि अपनी सौ से अधिक कविताओं के संग्रह 'माँ होती हूँ जब' में मातृत्व की परम उदार स्त्री की छवि के साथ मेघना शर्मा अपनी ऊर्जस्वित प्रखरता, अपने आकर्षक मुहावरों और बिम्बमयता के कारण हिन्दी कविता में महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराती है जिसका स्वागत किया जाना चाहिये।

चर्चित स्त्री-विमर्शकार और सामाजिक विषयों पर गहन चिन्तन करने वाली महत्वपूर्ण विचारक के रूप में ख्यात मेघना शर्मा का जन्म नीमच (मध्यप्रदेश) में हुआ और इन्होंने आधुनिक भारतीय इतिहास में स्नातकोत्तर सहित डॉक्टरेट की उपाधि अर्जित की। अनेक संस्थाओं यथा-नॉर्थ ईस्ट हिस्ट्री एसोसिएशन, शिलांग (मेघालय), एकेडेमी ऑफ वेल विंग सोसायटी, उदयपुर (राजस्थान), सेन्ट्रल इंडियन जर्नल ऑफ हिस्टोरिकल एण्ड आर्कैलॉजिकल रिसर्च, पन्ना (मध्यप्रदेश) आदि संस्थाओं से सक्रिय सम्बद्धता के साथ-साथ इन्होंने अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं से जुड़कर स्त्रियों के संघर्ष को गति दी है और सामाजिक कार्यों में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। कई संस्थाओं की आजीवन सदस्या होते हुए उनसे संबद्ध रहकर साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न मेघना शर्मा ने इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस की सक्रिय सदस्या रहते हुए प्रांतीय-राष्ट्रीय संगोष्ठियों में नई सोच से सम्बन्धित विचारों को इतिहास, समाज-अध्ययन तथा स्त्री-सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महिला आयोग द्वारा प्रायोजित कार्यशालाओं में स्त्री विषयक व्याख्यान सहित इतिहास के अलावा सम-सामयिक सामाजिक विषयों पर राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पत्र वाचन और उनके प्रकाशन के साथ-साथ अनेक राष्ट्रीय मंचों के अतिरिक्त मेघना शर्मा ने बैकांक (थाईलैण्ड) के कई विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देकर भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

लगभग डेढ़ दशक से सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों के मंच संचालन में राष्ट्रीय ख्याति। आकाशवाणी और दूरदर्शन से कविताओं का प्रसारण। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कविताओं का प्रकाशन। विज्ञान गल्प लेखन से सम्बद्ध कहानियों का भी राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशन।

अपनी वैचारिक पुस्तक 'वोमेन : इन द आईज ऑफ स्वामी दयानन्द सरस्वती' जैसे विचारोत्तेजित करने वाली पुस्तक की लेखिका के रूप में चर्चित मेघना शर्मा को अनेक फेलोशिप तथा सम्मान मिले हैं जिनमें इतिहास में विश्वविद्यालय अनुदान की फेलोशिप (2003), भारत सरकार द्वारा प्रायोजित कार्यशाला रेडियो माध्यम के लिए विज्ञान गल्प लेखन में सम्मान (2002) तथा स्त्री-संघर्षों को स्वर देने वाली कवयित्री के रूप में प्राप्त हिन्दी सेवी सम्मान शामिल है।

अपनी वैचारिकता, गाँधीवादी दृष्टि, अधुनातन इतिहास की नवीनतम समझ और प्रखर वक्ता के रूप में चर्चित मेघना शर्मा महत्वपूर्ण कवयित्री भी है जिनकी कविताएँ अपनी व्यंजनात्मक पदावली और संवेदनात्मक सघनता के कारण बहुत प्रभावित करती है। अपने बहुआयामी कार्यों के लिए प्रतिबद्ध मेघना शर्मा महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान) में इतिहास की व्याख्याता है।

सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर
स्थापित १९६४
www.suryaprakashanmandir.com

माँ होती हूँ जब ■ मेघना शर्मा

माँ
होती हूँ जब...

मेघना शर्मा

हाल के वर्षों में हिन्दी की समकालीन कविता के परिदृश्य में उभरी मेघना शर्मा अपनी कविताओं की व्यंजना, संवेदनात्मक सघनता और मर्मभेदी दृष्टि के कारण सहज ही आकर्षित करती है। 'माँ होती हूँ जब' शीर्षक अपने पहले ही संग्रह में मेघना शर्मा ने जैसी कविताएँ दी हैं, वे यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि वे अपनी अभिव्यक्ति में स्त्री-संघर्ष को प्रेरित करने के साथ-साथ अपने निजी संसार में उत्कट और प्रतिबद्ध जीवन के प्रति कृतसंकल्प है। उनकी कवयित्री एक तरफ घोषणा करती है - 'मैं जीवन को देखती हूँ। दहकते अंगारों में/और चल पड़ती हूँ/बिना परवाह किये फफोलों की' तो दूसरी तरफ यह प्रतिबद्धता भी व्यक्त करती है -

'स्त्री नही होती देह/न होती मिट्टी/न रेत न दरख्त/वह होती है/सिर्फ वह होती है पुकार/चीरती हुई धरती आकाश।'

इसके साथ-साथ अपनी उत्कट जीजीविषा की अदम्यता के कारण कवयित्री की कविताएँ अधिक प्रबलता से हमारे मन पर उतरती जाती है – '...या सुबह की ताजा धूप की/दमकती हल्दी रंगी उजास में/हम होंगे/फिर भी हम होंगे/न होते यदि हम/न होता कुछ भी/हम हैं और जीवन है।'

अपनी कविताओं में विश्वास और अपने होने के स्वाभिमान को उपर्युक्त पंक्तियों में मेघना ने जिस रूप में रखा है, उससे वे समकालीन हिन्दी कविता में अलग पहचान के साथ सामने आती है। इस संग्रह की अधिकतर कविताओं में वैशिष्ट्य यह है कि वे कम बोलती हैं। नपे-तुले वाक्यों में, प्रयुक्त बिम्बों में ध्वनित जीवन के कशमकश और प्रश्नों को वेदना के साथ उठाती यह कविताएँ समकालीन काव्य परिदृश्य में अलग से पहचानी जा सकती है। इन कविताओं में एक स्त्री की संघर्षशीलता, उसकी वेदना, निरन्तर उत्पीड़न से प्राप्त यातना का एक हृदयस्पर्शी संसार तो है ही; जो स्त्री को स्वाधीनता का उद्घोष करता है। पर इसके साथ-साथ लक्षित की जाने वाली सच्चाई यह है कि मेघना का स्त्री-संसार प्रचलित नारीवाद के आत्यन्तिक निषेध का संसार नहीं है जो प्रचलन में आकर सामाजिक सन्तुलन को नष्ट कर देने का प्रस्ताव करे। यह काव्य-संसार स्त्री-पुरूष के परस्पर सामंजस्य और विश्वास को बल देने के साथ-साथ मानवीय मूल्यों तथा करूणा को प्रतिष्ठित करता है जिसकी आज बहुत जरूरत है। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि एक

डॉ. मेघना शर्मा

स्नातकोत्तर इतिहास (स्वर्ण पदक),
पत्रकारिता एवं जनसंचार (स्वर्ण पदक)
यू.जी.सी–नेट, जे.आर.एफ., एस.आर.एफ.,
पी.एच.डी. (इतिहास)

चर्चित स्त्री–विमर्शकार और सामाजिक विषयों पर गहन चिंतन करने वाली महत्वपूर्ण विचाारक के रूप में ख्यात मेघना शर्मा ने नॉर्थ ईस्ट हिस्ट्री एसोसिएशन, शिलांग (मेघालय), एकेडमी ऑफ वेल बींग सोसायटी, उदयपुर (राजस्थान), शोधक, जयपुर (राजस्थान), अंतरा, भोपाल (मध्यप्रदेश), व्लर्ड पीस मूवमेण्ट ट्रस्ट, मेरठ (उतरप्रदेश)आदि संस्थाओं/प्रकाशनों से सक्रिय सम्बद्धता के साथ–साथ अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं से जुड़कर स्त्रियों के संघर्ष को गति दी है और सामाजिक कार्यों में अपनी उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। कई संस्थाओं की आजीवान सदस्या होते हुए उनके सम्बद्ध रहकर साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न मेघना शर्मा ने इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस एवं राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस की सक्रिय सदस्य रहते हुए प्रांतीय –राष्ट्रीय संगोष्ठियों में नई सोच से सम्बन्धित विचारों को इतिहास, समाज अध्ययन तथा स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। महिला आयोग द्वारा प्रायोजित कार्यशालाओं में स्त्री विषयक व्याख्यान सहित इतिहास के अलावा सम–सामयिक सामाजिक विषयों पर राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पत्र वाचन और उनके प्रकाशन के साथ–साथ अनेक राष्ट्रीय मंचों के अतिरिक्त मेघना शर्मा ने बैकांक (थाईलैण्ड) के कई विश्वविद्यालय में व्याख्यान देकर भारत का प्रतिनिधित्व किया। इसके अलावा आपने सर्वधर्म समभाव, नारी विमर्श, एतिहासिक विषयवस्तु व पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों पर अनेक विश्वविद्यालयों व संस्थानों में आयोजित कॉन्फ्रेसों में व्याख्यान दिए हैं। समाचार पत्र/पत्रिकाओं के सम्पादन का अनुभव। कई राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं के सम्पादक मण्डल की सदस्या। आकाशवाणी (प्रसार भारती) से कविताओं का प्रसारण। लगभग डेढ़ दशक से सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रमों के मंच संचालन में राष्ट्रीय ख्याति।

प्रकाशन :

वूमन : इन द आइज़ ऑफ दयानन्द (इतिहास व नारी विमर्श विषयक पुस्तक); माँ होती हूँ जब... (काव्य संग्रह), सेवन फेसेट्स ऑफ वूमनः पास्ट एण्ड प्रेजेण्ट (स्त्री विमर्श आधारित पुस्तक), रिश्तों की वसीयत (कथा संग्रह); रफू की हुई ज़िन्दगी (काव्य संग्रह); मधुमती, राजस्थान साहित्य अकादमी (उदयपुर) नई सदी के श्रेष्ठ रचनाकार, प्रेमाभिव्यक्ति , दुनिया इन दिनों, भारत के प्रतिनिधि हस्ताक्षर, श्रेष्ठ काव्य संगम, नारी चेतना की आवाज, इक्कीसवीं सदी की श्रेष्ठ कविताऐं (नई दिल्ली), विज्ञानकथा (फैजाबाद, उ.प्र.) कथारंग (बीकानेर), दैनिक मैट्रो हमारा (नोएडा), टाबर टोली (हनुमानगढ़), मौसम (झारखण्ड), समावर्तन (उज्जैन), हमारी पहल (झारखण्ड), पंजाब टुडे (कनाडा), आधुनिक साहित्य (नई दिल्ली) व मैसेन्जर ऑफ आर्ट (ऑनलाईन) के अलावा दैनिक समाचार पत्रों के रविवारीय विशेष अंकों आदि में कविता, लघुकथाओं, लेख एवं कहानियों का निरन्तर प्रकाशन।

साहित्य के क्षेत्र में पुरस्कार/सम्मान :

तेजस्विनी अवार्ड, नई दिल्ली (2017); शंभु शेखर राज्यस्तरीय विशिष्ट साहित्य पुरस्कार (2016); नारी गौरव सम्मान–नई दिल्ली (2016), फूलमति तिवारी सम्मान–सूरतगढ़ (2016); भगवानदास किराडू 'नवीन अलंकरण' बीकानेर (2016); साहित्य सम्मान – रोटरी क्लब बीकानेर मिडटाउन बीकानेर (2016), श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान–नई दिल्ली (2015); हिन्दी सेवी सम्मान – नई दिल्ली (2013), विज्ञान कथा लेखन पुरस्कार, भारत सरकार उपक्रम, अजमेर (2001)।

वर्तमान सम्प्रति :

अपने बहुआयामी कार्यों के लिये प्रतिबद्ध डॉ. मेघना शर्मा महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान) में इतिहास विषय में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत है।

मुट्ठी में आकाश

डॉ. मेघना शर्मा

मुट्ठी में आकाश

डॉ. मेघना शर्मा

गरिमामय बनाता है, वहीं लोक-संवेदना इसे जन-सुलभ भी बनाए रखती है। भाषा न तो अत्यधिक दुरूह है और न ही अति सरल—यह संतुलन ही काव्य की शक्ति है।

अलंकारों का प्रयोग स्वाभाविक रूप से हुआ है। उपमा, रूपक, प्रतीक और मानवीकरण जैसे अलंकार भावों को सजाने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें स्पष्ट और प्रभावी बनाने के लिए प्रयुक्त हुए हैं। प्रतीकों के माध्यम से कवि गहरे अर्थ संकेत करता है, जिससे कविता की बहुस्तरीय व्याख्या संभव हो जाती है। बिंब योजना सजीव है—प्रकृति, समय, प्रकाश और अंधकार जैसे बिंब भावों को मूर्त रूप प्रदान करते हैं।

छंद और लय की दृष्टि से भी काव्य संतुलित है। कहीं मुक्त छंद की स्वतंत्रता दिखाई देती है, तो कहीं पारंपरिक लय का अनुशासन। इससे कविताओं में एकरसता नहीं आती और पाठक की रुचि बनी रहती है। लय भावों के अनुरूप परिवर्तित होती रहती है—जहाँ भाव गंभीर हैं वहाँ लय मंद है, और जहाँ अनुभूति प्रबल है वहाँ प्रवाह तीव्र हो जाता है।

इन कविताओं की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे पाठक से संवाद करती हैं। कवि अपने विचार थोपता नहीं, बल्कि संकेत करता है, प्रश्न उठाता है और पाठक को उत्तर खोजने की स्वतंत्रता देता है। इस दृष्टि से यह काव्य केवल पढ़ने का विषय नहीं, बल्कि अनुभव करने की वस्तु बन जाता है। पाठक अपनी जीवन-दृष्टि और अनुभवों के अनुसार इन कविताओं से अर्थ ग्रहण कर सकता है।

समग्र रूप से, कहा जा सकता है कि काव्य रचनाएँ भावनात्मक, बौद्धिक और कलात्मक तीनों स्तरों पर सशक्त हैं। ये कविताएँ भारतीय साहित्य की चिंतनशील परंपरा को आगे बढ़ाती हैं और यह सिद्ध करती हैं कि काव्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि जीवन को समझने और संवेदना को परिष्कृत करने का माध्यम भी है। इन रचनाओं का प्रभाव पाठक के मन पर स्थायी पड़ता है और उसे भीतर तक स्पर्श करता है।

डॉ. मेघना शर्मा

कवयित्री कथाकार,

बीकानेर (राजस्थान)

शिक्षा :

* एम. ए इतिहास
(स्वर्ण पदक 2002)
* बीजेएमसी व एमजेएमसी
(स्नातक व स्नातकोत्तर,
पत्रकारिता व जनसंचार)
स्वर्ण पदक
* यूजीसी
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली) की प्रतिष्ठित नेट
व जूनियर रिसर्च फेलोशिप
से सम्मानित (2003)
* पीएच.डी (इतिहास) 2010

साहित्यिक प्रकाशन :

मां होती हूं जब..., रफ़ू की हुई ज़िन्दगी, हथेली भर उजास (काव्य संग्रह) रिश्तों की वसीयत (कहानी संग्रह), मुट्ठी में आकाश (बाल गीत संग्रह), अमूर्त दायरे (उपन्यास प्रकाशनाधीन), कुछ अनकही बातें (संपादित पुस्तक, सह संपादन)

साहित्य के क्षेत्र में पुरस्कार/सम्मान :

वीर दुर्गादास राठौड़ सम्मान (मेहरानगढ़ म्यूजियम ट्रस्ट, जोधपुर 2017), 18वां रामगोपाल गिरधारीलाल सर्राफ पुरस्कार (द यंग वेलफेयर सोसाइटी, रतनगढ़, राजस्थान 2017), फूलमती तिवारी स्मृति सम्मान (श्रीमती फूलमती कमलादेवी स्मृति संस्थान, सूरतगढ़, श्रीगंगानगर, 2016), अंतरराष्ट्रीय ताज़ मुग़लिनी साहित्य सम्मान (ऑल इंडिया पोएटेस कॉन्फ्रेंस, चंडीगढ़ पंजाब 2017), डॉ.भगवानदास किराडू नवीन अलंकरण, (डॉ. भगवानदास किराडू नवीन प्रन्यास, बीकानेर, राजस्थान, 2016), शंभू शेखर राज्य स्तरीय विशिष्ट साहित्य सम्मान (शंभू शेखर सक्सेना सामाजिक विकास संस्थान, बीकानेर, राजस्थान 2016), तेजस्विनी अवार्ड (आगमन संस्थान, नई दिल्ली 2017), वुमन एंपावरमेंट अवार्ड (आर्ट एंड राइटर केटेगरी, जयपुर राजस्थान 2016), विज्ञान कथा गल्प लेखन हेतु भारत सरकार उपक्रम (विज्ञान कथा लेखन समिति, फैज़ाबाद) द्वारा सम्मानित, अजमेर (राजस्थान) 2001, हिंदी सेवी सम्मान (2013), श्रेष्ठ रचनाकार सम्मान (2015), नारी गौरव सम्मान (2016), जेएमडी पब्लिकेशंस, नई दिल्ली, साहित्य सम्मान (रोटरी क्लब बीकानेर मिडटाउन, (2016)।

- राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, राजस्थान की शोध व अंकेक्षण समिति की सदस्य 2023
- केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली में राजस्थानी भाषा केंद्रीय साहित्य युवा पुरस्कार हेतु गठित जूरी में शामिल 2021
- प्रसार भारती (आकाशवाणी/ दूरदर्शन) बीकानेर व जयपुर केंद्र व स्थानीय चैनलों से कविताएं /साक्षात्कार /वार्ताएं आदि लगातार प्रसारित।
- नारी विमर्श पर पुस्तकें प्रकाशित, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर राजस्थान की पत्रिका मधुमती के साथ साथ भारत में झारखंड, मध्य प्रदेश, नई दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कनाड़ा से समीक्षाएं, भूमिका, लघु कथाएं, विज्ञान कथाएं, टिप्पणियां, कथाएं, आलेख आदि प्रकाशित।
- इलैक्ट्रॉनिक मीडिया में न्यूज़ एंकर का अनुभव, लगभग ढाई दशक से सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक समारोहों में मंच संचालन में राष्ट्रीय ख्याति।

वर्तमान सम्प्रति :

डॉ. मेघना शर्मा, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर में इतिहास विषय की एसोसिएट प्रोफेसर व विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं।

संपर्क सूत्र : ईमेल : drmeghnasharma@mgsubikaner.ac.in

विकास प्रकाशन
जुबली नागरी भण्डार, स्टेशन रोड
बीकानेर-334001 (राज.)

978-81-992165-3-2

हथेली भर उजास

डॉ. मेघना शर्मा

हथेली भर उजास

(कविता संग्रह)

डॉ. मेघना शर्मा

काव्य संग्रह हथेली भर उजास में सम्मिलित काव्य रचनाएँ भारतीय साहित्यिक परंपरा की उस सशक्त धारा का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ कला, इतिहास, संस्कृति और आध्यात्मिक चेतना एक-दूसरे में घुल-मिलकर काव्यात्मक अभिव्यक्ति का रूप ले लेती हैं। ये कविताएँ केवल सौंदर्य की अनुभूति नहीं करातीं, बल्कि पाठक को चिंतन, आत्ममंथन और मूल्यबोध की यात्रा पर भी ले जाती हैं। काव्य का मूल स्वर गंभीर, संवेदनशील और आत्मान्वेषी है, जो इसे साधारण भावुकता से ऊपर उठाकर बौद्धिक स्तर प्रदान करता है।

इन कविताओं का भाव-पक्ष अत्यंत समृद्ध है। कवयित्री ने जीवन, कला, मानव अस्तित्व, समय और संस्कृति जैसे व्यापक विषयों को काव्य का आधार बनाया है। कहीं जीवन की नश्वरता का बोध है, तो कहीं सृजन की शाश्वत शक्ति का गौरवगान। भावों की अभिव्यक्ति में गहराई है, परंतु कहीं भी अतिरंजना नहीं दिखाई देती। संवेदना संयमित है, जिससे कविता में संतुलन बना रहता है। कवयित्री की दृष्टि बाह्य जगत से अधिक आंतरिक अनुभूति पर केंद्रित प्रतीत होती है, जिससे काव्य आत्मसंवाद का रूप ले लेता है।

काव्य में भारतीय दर्शन की स्पष्ट झलक मिलती है। कर्म, आत्मा, समय और चेतना जैसे दार्शनिक तत्व कविताओं को गंभीर अर्थवत्ता प्रदान करते हैं। यह दर्शन उपदेशात्मक न होकर अनुभवजन्य है, जो पाठक को स्वाभाविक रूप से सोचने के लिए प्रेरित करता है। कवि जीवन को केवल भौतिक स्तर पर नहीं देखता, बल्कि उसके आध्यात्मिक और सांस्कृतिक आयामों को भी उद्घाटित करता है। यही कारण है कि काव्य में एक प्रकार की शांति, स्थैर्य और गहनता महसूस होती है।

कला-पक्ष की दृष्टि से कविताएँ अत्यंत सशक्त हैं। भाषा प्रवाहपूर्ण, संतुलित और भावानुकूल है। शब्दों का चयन सोच-समझकर किया गया है, जिससे अर्थ स्पष्ट और प्रभावी बनता है। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली और सरल हिंदी का समन्वय काव्य को

लगातार फ्लेप 2 पर...

Dr. Gopal Krishan Vyas

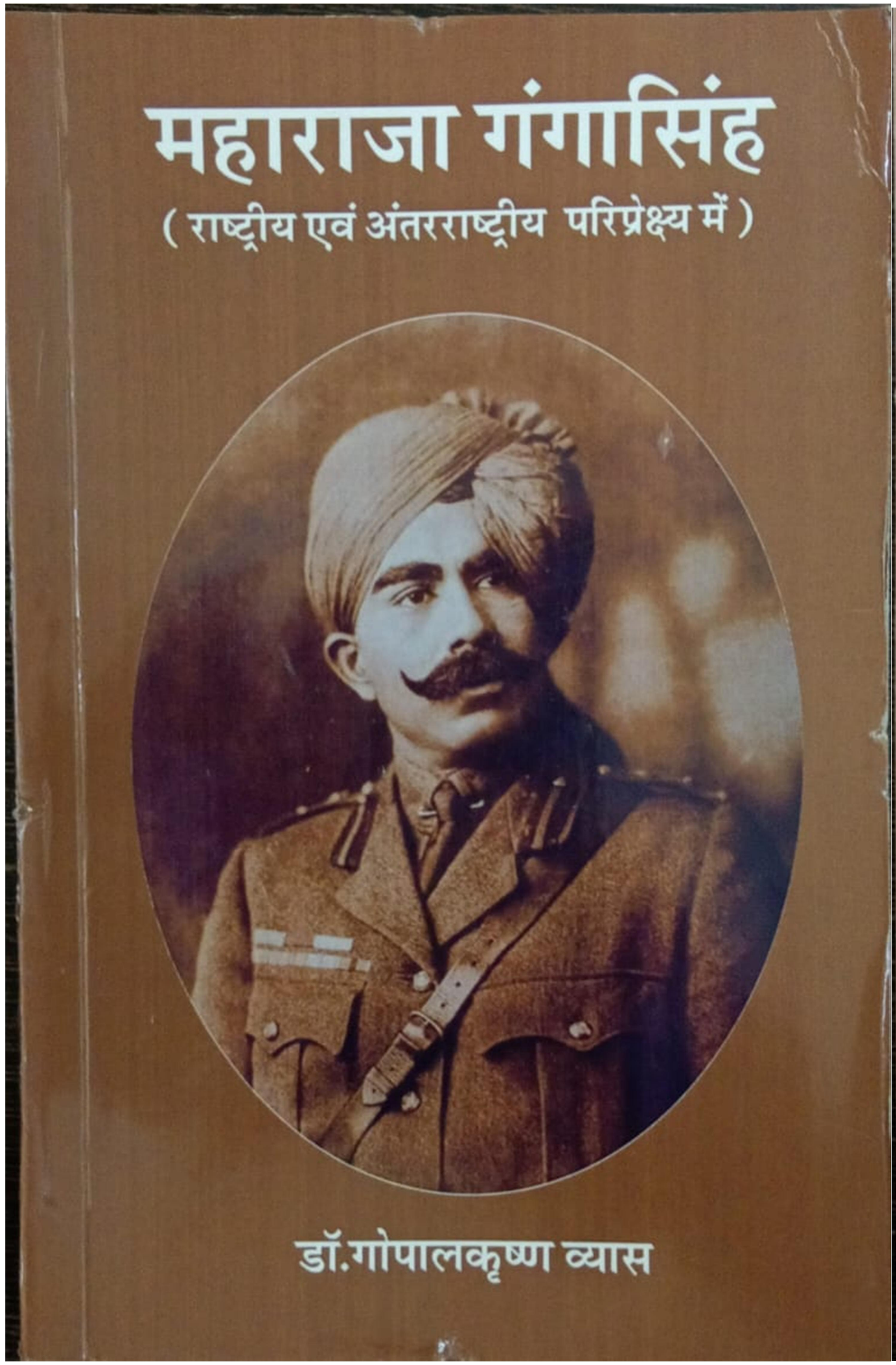

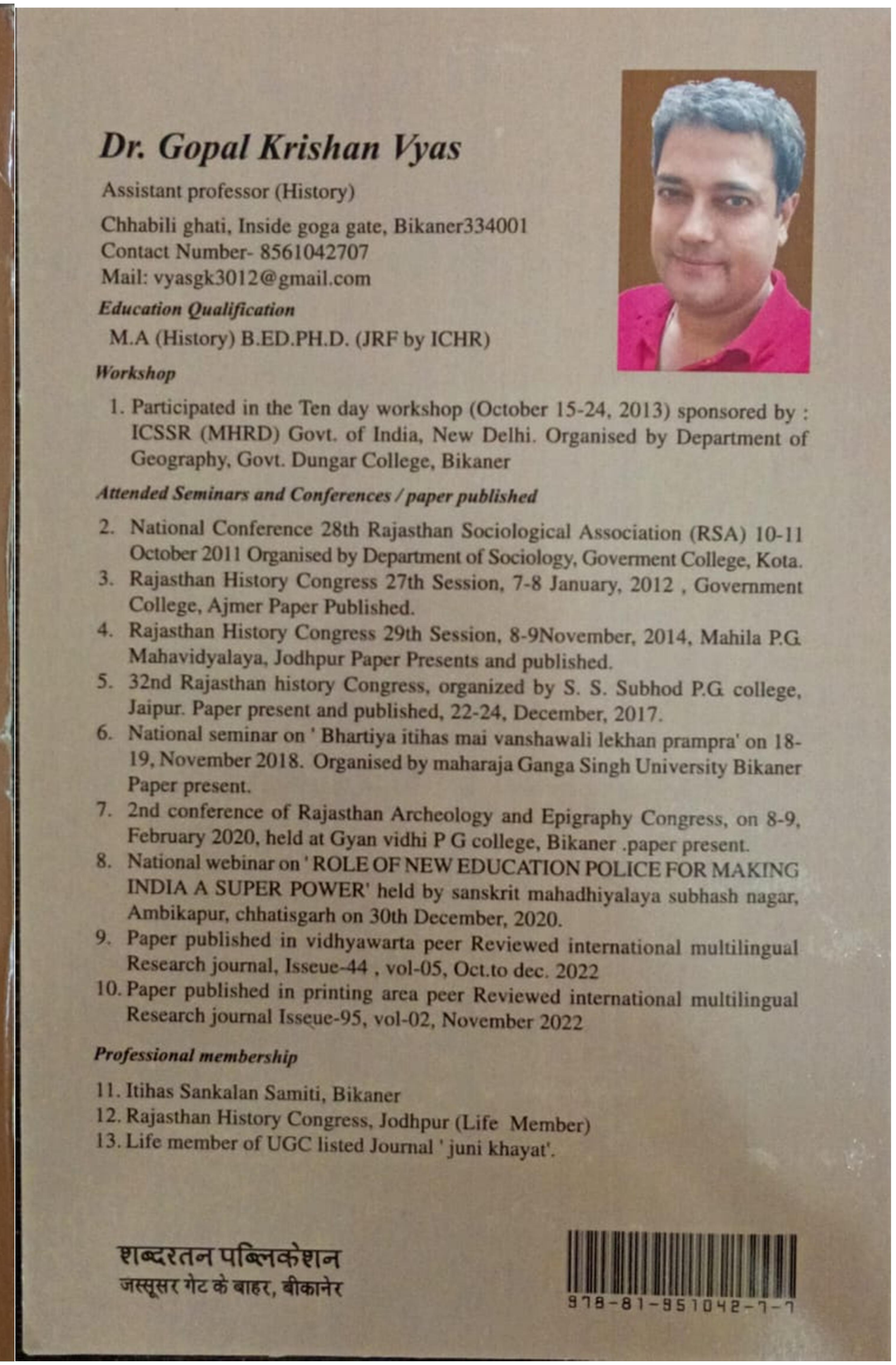

Dr. Gopal Krishan Vyas

Assistant professor (History)

Chhabili ghati, Inside goga gate, Bikaner334001
Contact Number- 8561042707
Mail: vyasgk3012@gmail.com

Education Qualification

M.A (History) B.ED.PH.D. (JRF by ICHR)

Workshop

1. Participated in the Ten day workshop (October 15-24, 2013) sponsored by : ICSSR (MHRD) Govt. of India, New Delhi. Organised by Department of Geography, Govt. Dungar College, Bikaner

Attended Seminars and Conferences / paper published

2. National Conference 28th Rajasthan Sociological Association (RSA) 10-11 October 2011 Organised by Department of Sociology, Goverment College, Kota.
3. Rajasthan History Congress 27th Session, 7-8 January, 2012 , Government College, Ajmer Paper Published.
4. Rajasthan History Congress 29th Session, 8-9November, 2014, Mahila P.G. Mahavidyalaya, Jodhpur Paper Presents and published.
5. 32nd Rajasthan history Congress, organized by S. S. Subhod P.G college, Jaipur. Paper present and published, 22-24, December, 2017.
6. National seminar on ' Bhartiya itihas mai vanshawali lekhan prampra' on 18-19, November 2018. Organised by maharaja Ganga Singh University Bikaner Paper present.
7. 2nd conference of Rajasthan Archeology and Epigraphy Congress, on 8-9, February 2020, held at Gyan vidhi P G college, Bikaner .paper present.
8. National webinar on ' ROLE OF NEW EDUCATION POLICE FOR MAKING INDIA A SUPER POWER' held by sanskrit mahadhiyalaya subhash nagar, Ambikapur, chhatisgarh on 30th December, 2020.
9. Paper published in vidhyawarta peer Reviewed international multilingual Research journal, Isseue-44 , vol-05, Oct.to dec. 2022
10. Paper published in printing area peer Reviewed international multilingual Research journal Isseue-95, vol-02, November 2022

Professional membership

11. Itihas Sankalan Samiti, Bikaner
12. Rajasthan History Congress, Jodhpur (Life Member)
13. Life member of UGC listed Journal ' juni khayat'.

शब्दरतन पब्लिकेशन
जस्सूसर गेट के बाहर, बीकानेर

978-81-951042-7-7

Dr. Mukesh Harsh

भारतीय संस्कृति समाज और पुष्करणा

डॉ. मुकेश हर्ष

डॉ. मुकेश हर्ष

जन्म : 20 जुलाई, 1978

माता : स्व. श्रीमती मंजूदेवी हर्ष

पिता : श्री राधाकिसन हर्ष

शिक्षा : एम.ए., एम.फिल, पी.एच.डी., बी.जे.एम.सी., बी.एड.

शोध– 'बीकानेर राज्य की छतरियों का स्थापत्य एवं कला की दृष्टि से अध्ययन' विषय पर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली (ICHR, New Delhi) द्वारा प्रदत्त रिसर्च प्रोजेक्ट पर कार्य कर रहे हैं

प्रकाशन व सह–शैक्षणिक गतिविधियां–विभिन्न राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सेमीनारों में सहभागिता व विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में आलेखों का प्रकाशन।

पुरस्कार–11वाँ शिक्षक सम्मान पुरस्कार (महाराज सिटी केबल व सिंथेसिस कोचिंग द्वारा) 29वाँ, 33वाँ अलंकार शिक्षक सम्मान, अखिल भारतीय पुष्टिकर सेवा परिषद–2010 राजस्थान ब्राह्मण महासभा–2010

सदस्य–इण्डियन हिस्ट्री काँग्रेस, नई दिल्ली

राजस्थान हिस्ट्री काँग्रेस, जोधपुर (आजीवन)

अजीत फाउण्डेशन, बीकानेर

भारतीय इतिहास संकलन समिति, बीकानेर

सम्प्रति – व्याख्याता, श्री नेहरू शारदा पीठ (पीजी) महाविद्यालय, बीकानेर

पता – हर्षों का चौक, बीकानेर

ई–मेल – dr.mkharsh78@gmail.com

सूर्य प्रकाशन मन्दिर, बीकानेर

स्थापित १९६४

www.suryaprakashanmandir.com

9789387252165

CamScanner

CamScanner

बीकानेर की छतरियां : स्थापत्य एवं कलात्मक अध्ययन

डॉ. मुकेश हर्ष

डॉ. मुकेश हर्ष : संक्षिप्त परिचय

माता : स्व. श्रीमती मंजूदेवी हर्ष

पिता : श्री राधाकिशन हर्ष

शिक्षा : एम.ए. (इतिहास व हिन्दी), एम.फिल, पीएच.डी., बी.एड., बी.जे.एम.सी. व कम्प्यूटर प्रमाण पत्र

शोध :
- ''बीकानेर राज्य में पुष्करणा ब्राह्मणों का सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक क्षेत्रों में योगदान (1650 से 1950)'' विषय पर, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त डॉक्टरेट फैलोशिप द्वारा पीएच.डी.।
- ''बीकानेर में पुष्करणा ब्राह्मणों का भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान'' विषय पर लघु-शोध प्रबंध।
- ''बीकानेर राज्य की छतरियों का स्थापत्य एवं कला की दृष्टि से अध्ययन'' विषय पर भा.इति.अनु. परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रदत रिसर्च प्रोजेक्ट (2015-18)।
- वर्तमान में बीकानेर की बगीची व्यवस्था पर शोध कार्य।

पुस्तकें :
- भारतीय संस्कृति समाज और पुष्करणा
- चूरू जिले का स्थापत्य एवं कलात्मक अध्ययन

प्रकाशन : 30 से अधिक शोध-पत्र विभिन्न राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित।

सेवाएँ : 20 वर्षों से इतिहास प्राध्यापक के रूप में कार्यरत। पिछले 6 वर्षों से महाराज गंगासिंह विश्वविद्यालय में अतिथि व्याख्याता।

पुरस्कार : 11वाँ शिक्षक सम्मान पुरस्कार
29वाँ, 33वाँ अलंकार शिक्षक सम्मान
अखिल भारतीय पुष्टिकर सेवा परिषद्-2010
राजस्थान ब्राह्मण महासभा-2010

सदस्य : राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस, जोधपुर (आजीवन)
आर्कियोलॉजी एण्ड एपीग्राफी कांग्रेस, बीकानेर (आजीवन)

पता : हर्षों का चौक, बीकानेर मोबाईल-9928326515
ई-मेल : dr.mkharsh98@gmail.com

ISBN : 978-81-958348-1-5

₹ 650/-
मुद्रक – राजस्थान कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स, रामपुरिया मोहल्ला, बीकानेर मो. 9352999951

CamScanner
CamScanner

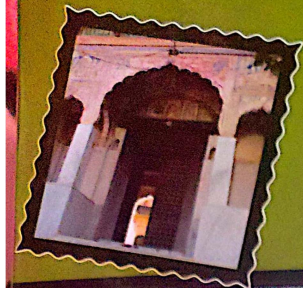

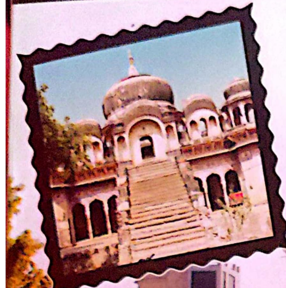

चूरू जिले का स्थापत्य एवं कलात्मक अध्ययन

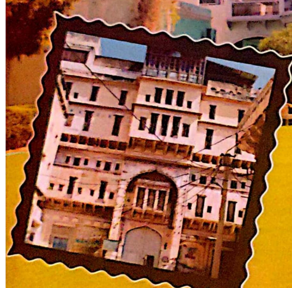

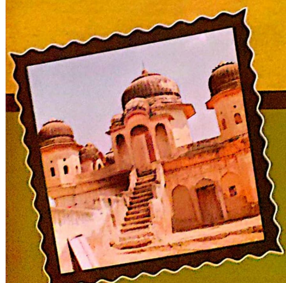

डॉ. मुकेश हर्ष

CamScanner

डॉ. मुकेश हर्ष : संक्षिप्त परिचय

माता : स्व. श्रीमती मंजूदेवी हर्ष

पिता : श्री राधाकिशन हर्ष

शिक्षा : एम.ए. (इतिहास व हिन्दी), एम.फिल, पीएच.डी., बी.एड., बी.जे.एम.सी. व कम्प्यूटर प्रमाण पत्र

शोध :
- "बीकानेर राज्य में पुष्करणा ब्राह्मणों का सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक क्षेत्रों में योगदान (1650 से 1950)" विषय पर, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रदत्त डॉक्टरेट फैलोशिप द्वारा पीएच.डी.।
- "बीकानेर में पुष्करणा ब्राह्मणों का भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान" विषय पर लघु-शोध प्रबंध।
- "बीकानेर राज्य की छतरियों का स्थापत्य एवं कला की दृष्टि से अध्ययन" विषय पर भा.इति.अनु. परिषद्, नई दिल्ली द्वारा प्रदत रिसर्च प्रोजेक्ट (2015-18)।
- वर्तमान में बीकानेर की बगीची व्यवस्था पर शोध कार्य।

पुस्तकें :
- भारतीय संस्कृति समाज और पुष्करणा
- बीकानेर की छतरियां : स्थापत्य एवं कलात्मक अध्ययन

प्रकाशन : 30 से अधिक शोध-पत्र विभिन्न राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित।

सेवाएँ : 20 वर्षों से इतिहास प्राध्यापक के रूप में कार्यरत। पिछले 6 वर्षों से महाराज गंगासिंह विश्वविद्यालय में अतिथि व्याख्याता।

पुरस्कार : 11वाँ शिक्षक सम्मान पुरस्कार
29वाँ, 33वाँ अलंकार शिक्षक सम्मान
अखिल भारतीय पुष्टिकर सेवा परिषद्-2010
राजस्थान ब्राह्मण महासभा-2010

सदस्य : राजस्थान हिस्ट्री कांग्रेस, जोधपुर (आजीवन)
आर्कियोलॉजी एण्ड एपीग्राफी कांग्रेस, बीकानेर (आजीवन)

पता : हर्षों का चौक, बीकानेर मोबाईल-9928326515

ई-मेल : dr.mkharsh98@gmail.com

ISBN : 978-81-958348-4-6

9 788195 834846

₹ 350/-

मुद्रक – राजस्थान कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स, रामपुरिया मोहल्ला, बीकानेर मो. 9352999951

CamScanner

Dr. Ritesh Vyas

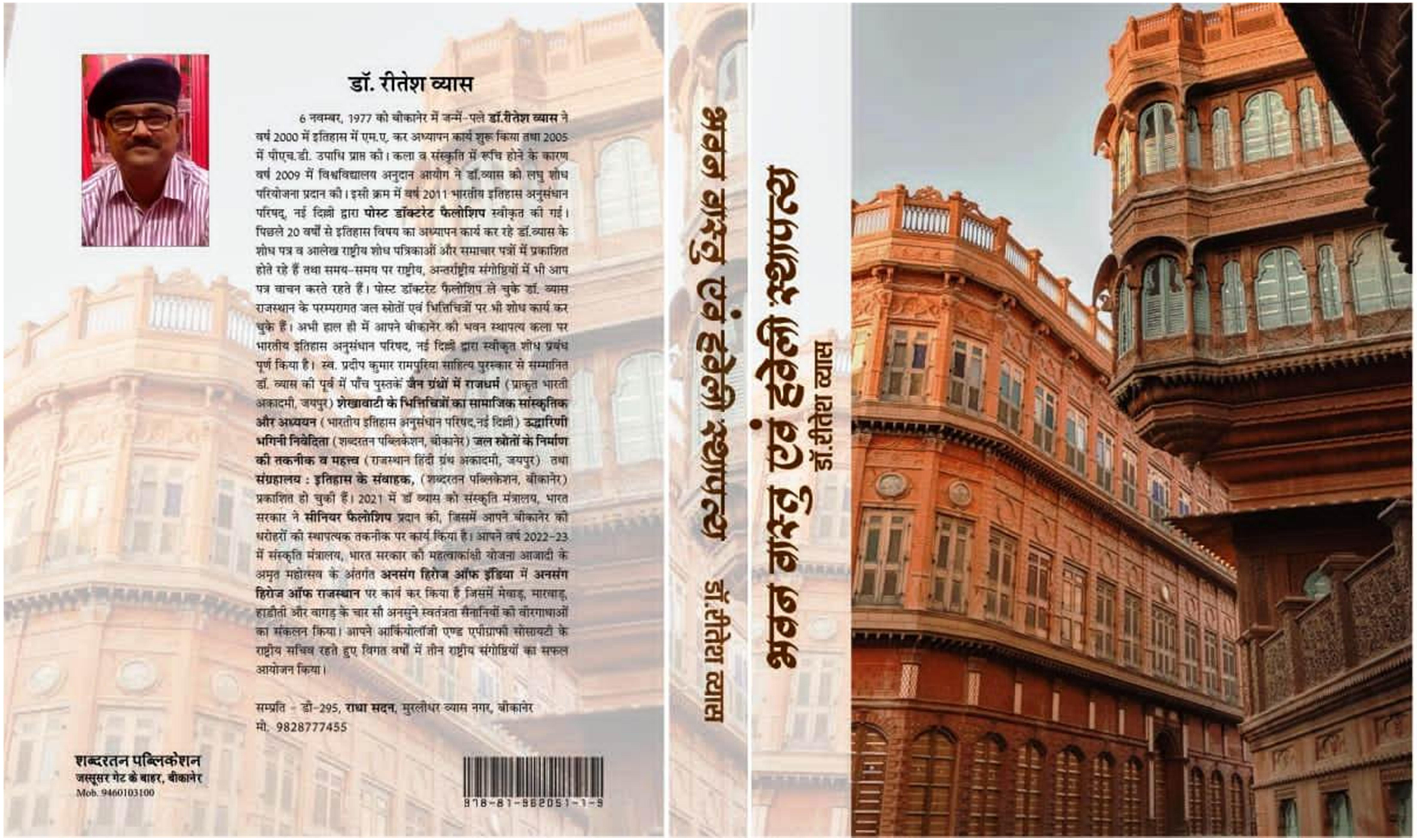
भवन वास्तु एवं हवेली स्थापत्य

डॉ. रीतेश व्यास

डॉ. रीतेश व्यास

6 नवम्बर, 1977 को बीकानेर में जन्में-पले **डॉ.रीतेश व्यास** ने वर्ष 2000 में इतिहास में एम.ए. कर अध्यापन कार्य शुरू किया तथा 2005 में पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। कला व संस्कृति में रुचि होने के कारण वर्ष 2009 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने डॉ.व्यास को लघु शोध परियोजना प्रदान की। इसी क्रम में वर्ष 2011 भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा **पोस्ट डॉक्टरेट फैलोशिप** स्वीकृत की गई। पिछले 20 वर्षों से इतिहास विषय का अध्यापन कार्य कर रहे डॉ.व्यास के शोध पत्र व आलेख राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं तथा समय-समय पर राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भी आप पत्र वाचन करते रहते हैं। पोस्ट डॉक्टरेट फैलोशिप ले चुके डॉ. व्यास राजस्थान के परम्परागत जल स्रोतों एवं भित्तिचित्रों पर भी शोध कार्य कर चुके हैं। अभी हाल ही में आपने बीकानेर की भवन स्थापत्य कला पर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत शोध प्रबंध पूर्ण किया है। स्व. प्रदीप कुमार रामपुरिया साहित्य पुरस्कार से सम्मानित डॉ. व्यास की पूर्व में पाँच पुस्तकें **जैन ग्रंथों में राजधर्म** (प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर) **शेखावाटी के भित्तिचित्रों का सामाजिक सांस्कृतिक और अध्ययन** (भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद,नई दिल्ली) **उद्धारिणी भगिनी निवेदिता** (शब्दरतन पब्लिकेशन, बीकानेर) **जल स्रोतों के निर्माण की तकनीक व महत्त्व** (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर) तथा **संग्रहालय : इतिहास के संवाहक,** (शब्दरतन पब्लिकेशन, बीकानेर) प्रकाशित हो चुकी हैं। 2021 में डॉ व्यास को संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने **सीनियर फैलोशिप** प्रदान की, जिसमें आपने बीकानेर की धरोहरों की स्थापत्यक तकनीक पर कार्य किया है। आपने वर्ष 2022-23 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत **अनसंग हिरोज ऑफ इंडिया में अनसंग हिरोज ऑफ राजस्थान** पर कार्य कर किया है जिसमें मेवाड़, मारवाड़, हाड़ौती और वागड़ के चार सौ अनसुने स्वतंत्रता सैनानियों की वीरगाथाओं का संकलन किया। आपने आर्कियोलॉजी एण्ड एपीग्राफी सोसायटी के राष्ट्रीय सचिव रहते हुए विगत वर्षों में तीन राष्ट्रीय संगोष्ठियों का सफल आयोजन किया।

सम्प्रति - डी-295, **राधा सदन**, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर
मो. 9828777455

शब्दरतन पब्लिकेशन
जस्सूसर गेट के बाहर, बीकानेर
Mob. 9460103100

978-81-962051-1-9

भवन वास्तु एवं हवेली स्थापत्य विषय अत्यंत रुचिकर और अत्यंत तकनीकी है। इसके साथ ही यह काफी व्यापक भी है। भारतीय भवन परंपरा एवं इसके विकास पर पथ प्रदर्शक शोध करने का श्रेय कई प्रारंभिक पश्चिमी विद्वानों को जाता है, जिसमें ई.बी.हेवेल एवं पर्सी ब्राउन प्रमुख है। इन्होंने अपने अध्ययन में भारतीय एवं प्रांतीय भवन निर्माण की इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी में आए परिवर्तनों को रेखांकित करने के अतिरिक्त प्रान्तीय शैलियों के पारस्परिक प्रभाव को भी उभारने का प्रयास किया। इनके पश्चात् कई पश्चिमी एवं भारतीय विशेषज्ञों ने इस विषय को आगे बढ़ाया। इसी क्रम में राजपूत रियासतों के महल स्थापत्य पर जी.एच.आर टिलोट्सन ने उल्लेखनीय कार्य किया जो *द राजपूत पैलेसेज* शीर्षक से 1987 में प्रकाशित होकर अकादमिक जगत के सम्मुख आया।

सूक्ष्म स्तर (Micro level) पर *डॉ रीतेश व्यास* ने इसी महत्वपूर्ण विषय पर अपना अध्ययन आगे बढ़ाया है। डॉ.व्यास ने बीकानेर की हवेली स्थापत्य को केन्द्र में रखकर स्थापत्य कला के विकास और भवन वास्तु विद्या के विस्तार को अपने अध्ययन का आधार बनाकर उसे व्यापक फलक पर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो अध्येताओं के लिए निश्चित ही उपयोगी होगा। हवेली शब्द फारसी से आया है जिसका अर्थ होता है *मुख्यालय* अर्थात दूसरे शब्दों में हवेली के स्वामी का आवास या निवास स्थान। हवेलियां आवासीय थीं इसलिए उनके विभिन्न भागों का अध्ययन उनके स्वामी की सामाजिक एवं आर्थिक प्रतिष्ठा(Stetus) को दर्शाता है। इन आलीशान आवासीय भवनों के निर्माण में उसी प्रकृति का अनुसरण किया जाता था। लेखक ने इन पहलुओं को स्पर्श करने का प्रयास किया है जो हवेलियों के वर्णन में उपलब्ध है। लेखक ने स्थापत्य कला की दृष्टि से इन आवासीय भवनों के सौंदर्य पर भी विस्तार से प्रकाश डाला है। हवेलियों की नक्काशी ही इन भवनों को विशिष्टता प्रदान करती है। उस्ता, मथेरण व चूनगर कलाकारों के द्वारा भवन की दीवारों पर उकेरी गई चित्रावलियां हवेली के संपूर्ण व्यक्तित्व को उजागर करती है। दैवीय प्रतिकों का अंकन भवन के व्यक्तित्व की पहचान के साथ-साथ उनके स्वामियों की धार्मिक और राजनीतिक रूचियों को भी दर्शाता है। इस बिंदु पर लेखक के कार्य को एक नई पहल के तौर पर देखा जाना चाहिए। अंत में भवन निर्माण के उपयोग में लिए जाने वाले औजारों का वर्णन भी अवस्थित ज्ञान में निश्चित ही अभिवृद्धि करेगा।

प्रो.बी.एल.भादानी

6 नवम्बर, 1977 को बीकानेर में जन्मे-पले **डॉ.रितेश व्यास** एम.ए. (इतिहास) एवं पोस्ट डॉक्टरेट हैं तथा पिछले 18 वर्ष से इतिहास विषय का अध्यापन कार्य कर रहे हैं। डॉ.व्यास के शोध पत्र व आलेख राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं और समाचार-पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं तथा समय-समय पर राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भी आप पत्र वाचन करते रहते हैं। भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली द्वारा **पोस्ट डॉक्टरेट फैलोशिप** ले चुके डॉ व्यास राजस्थान के परम्परागत जल स्रोतों एवं भित्ति चित्रों पर भी शोध कार्य कर चुके हैं और वर्तमान में बीकानेर की हवेली स्थापत्य पर शोध कार्य कर रहे हैं।2016 में स्वर्गीय प्रदीप कुमार रामपुरिया साहित्य पुरस्कार से सम्मानित डॉ.व्यास की पूर्व में दो पुस्तकें-**जैन ग्रंथों में राजधर्म** (प्राकृत भारती अकादमी,जयपुर) तथा **शेखावाटी के भित्ति चित्रों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन** (भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली) प्रकाशित हो चुकी हैं। राजस्थान के परम्परागत जल संग्रहण केन्द्रों की तकनीक एवं उनका सामाजिक और सांस्कृतिक महत्त्व पर आधारित एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक प्रेस में प्रकाशनाधीन है। वर्तमान में **सिस्टर निवेदिता कन्या महाविद्यालय**, बीकानेर में प्राचार्य के पद पर अपनी सेवाएँ दे रहे हैं।

डॉ.श्यामा पुरोहित का जन्म 5 नवम्बर 1976 को बीकानेर में हुआ। हिन्दी साहित्य में रुचि होने के कारण श्रीमती पुरोहित ने हिन्दी में एम.ए, सेट किया। 19 वर्षों से अध्यापन के कार्य में सक्रिय डॉ.पुरोहित के शोधपत्र एवं लेख अनेकों पत्र-पत्रिकाओं में छपते रहे हैं। इनकी विश्वविद्यालय स्तर की पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यक्रमानुसार पूर्व में भी प्रकाशित हो चुकी हैं। वर्तमान में **सिस्टर निवेदिता कन्या महाविद्यालय**, बीकानेर में निदेशक एवं हिन्दी व्याख्याता के पद पर अपनी सेवाएँ दे रही हैं।

978-81-933539-8-7

उद्धारिणी भगिनी निवेदिता

डॉ. रितेश व्यास • डॉ.श्यामा पुरोहित

उद्धारिणी

भगिनी निवेदिता

डॉ. रीतेश व्यास

डॉ.श्यामा पुरोहित

डॉ. रीतेश व्यास

6 नवम्बर, 1977 को बीकानेर में जन्में-पले **डॉ.रीतेश व्यास** ने वर्ष 2000 में इतिहास में एम.ए. कर अध्यापन कार्य शुरू किया तथा 2005 में पीएच.डी. उपाधि प्राप्त की। कला व संस्कृति में रूचि होने के कारण वर्ष 2009 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने डॉ.व्यास को लघु शोध परियोजना प्रदान की। इसी क्रम में वर्ष 2011 भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा **पोस्ट डॉक्टरेट फैलोशिप** स्वीकृत की गई। पिछले 20 वर्षों से इतिहास विषय का अध्यापन कार्य कर रहे डॉ.व्यास के शोध पत्र व आलेख राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं और समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं तथा समय-समय पर राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में भी आप पत्र वाचन करते रहते हैं। पोस्ट डॉक्टरेट फैलोशिप ले चुके डॉ. व्यास राजस्थान के परम्परागत जल स्रोतों एवं भित्तिचित्रों पर भी शोध कार्य कर चुके हैं। अभी हाल ही में आपने बीकानेर की भवन स्थापत्य कला पर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत शोध प्रबंध पूर्ण किया है। स्व. प्रदीप कुमार रामपुरिया साहित्य पुरस्कार से सम्मानित डॉ व्यास की पूर्व में चार पुस्तकें **जैन ग्रंथों में राजधर्म** (प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर) **शेखावाटी के भित्तिचित्रों का सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन** (भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद,नई दिल्ली) **उद्धारिणी भगिनी निवेदिता** (शब्दरतन पब्लिकेशन, बीकानेर) तथा **जल स्रोतों के निर्माण की तकनीक व महत्त्व** (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर) प्रकाशित हो चुकी हैं। 2021 में डॉ व्यास को संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार ने **सीनियर फैलोशिप** प्रदान की, जिसमें आप बीकानेर की धरोहरों की स्थापत्यक तकनीक पर कार्य कर रहे हैं। अभी हाल ही में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत **अनसंग हिरोज ऑफ इंडिया** में **अनसंग हिरोज ऑफ राजस्थान** पर कार्य कर रहे हैं। आपने आर्कियोलॉजी एण्ड एपीग्राफी सोसायटी के राष्ट्रीय सचिव रहते हुए विगत वर्षों में तीन राष्ट्रीय संगोष्ठियों का सफल आयोजन किया हैं। आप सोसायटी की वार्षिक प्रोसिडिंग्स के सम्पादक भी है।

सम्प्रति - डी-295, **राधा सदन**, मुरलीधर व्यास नगर, बीकानेर
मो. 9828777455

599/-

शब्दरतन पब्लिकेशन
जस्सूसर गेट के बाहर, बीकानेर
Mob. 9460103100

978-81-951042-8-4

संग्रहालय इतिहास के संवाहक * डॉ. रीतेश व्यास

संग्रहालय
इतिहास के संवाहक

डॉ. रीतेश व्यास

जलस्रोतों के निर्माण की तकनीक और महत्त्व

(शेखावाटी अंचल)

डॉ. रीतेश व्यास

शिक्षा मंत्रालय
भारत सरकार

राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

जलस्रोतों के निर्माण की तकनीक और महत्त्व
(शेखावाटी अंचल)
डॉ. रीतेश व्यास

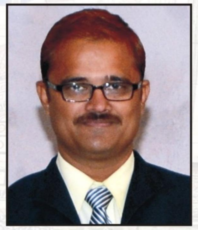

डॉ. रीतेश व्यास

शिक्षा : एम.ए.; इतिहास, पीएच.डी. पोस्ट डॉक्टरेट

सेवाएं : 15 वर्षों से इतिहास प्राध्यापक के रूप में कार्यरत, 9 वर्षों से शेखावाटी के भित्तिचित्रों के इतिहास लेखन तथा शेखावाटी के जल स्रोतों के अध्ययन से जुड़े है।
25 से अधिक शोधपत्र विभिन्न शोध पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में प्रकाशित।
कई राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में पत्र वाचन।

विशेष : राजस्थान में परम्परागत जल संग्रहण तकनीक एवं उनका सामाजिक और सांस्कृतिक महत्त्व (सीकर और चूरू के सन्दर्भ में) विषय पर भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् द्वारा **पोस्ट डॉक्टरेट फैलोशिप (2011)**

शेखावाटी के भित्तिचित्रों का सामाजिक व सांस्कृतिक अध्ययन विषय पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भोपाल द्वारा लघु शोध परियोजना (Minor Research Project) 2009

भित्तिचित्रों के संरक्षण के संबंध में प्रमुख शासन सचिव कला व संस्कृति के समक्ष Power Point Presentation शासन सचिवालय जयपुर, राजस्थान।

Book : Ph.D. Thesis (Polity in Jain Literature) Published by Prakriat Bharti Academy, Jaipur,Raj. (2013)

Contribution in Proceedings of National Seminar on "Recent Economic Depression: Capitalism & Road Ahead". (2009)

Contribution in Proceedings of National Seminar on "Social Sciences in 21st century: Role and Relevance" (2007)

Recognition/ Puraskar

Invited by Dept. of Archaeology and Museum, Gov. of Rajasthan for contribution in their journal.

Invited by District Collector, Sikar for Tourism Development in Shekhawati Region (Member, Dept. of History, SBD Todi College, Lachhmangarh, Sikar).

Appreciate by SDM Lachhmangarh, Sikar for technical support of training program of Nagar palika & Panchayat Election 2009-2010.

Appreciate by Maharaja Ganga Singh Trust Bikaner for my Research work of राजस्थान में परम्परागत जल संग्रहण तकनीक और उनका सामाजिक व सांस्कृतिक महत्व Feb. 2013.

Lt. Perdeep Kumar Rampuria Sahitya Puraskar by Shri Akhil Bhartvarshiya Sadhumargi Jain Sangh for own book Polity in jain Literature 2016, Mumbai.

Address : Dr Ritesh vyas
D-295 "Radha Sadan"
Murlidhar Vyas Nagar, BIKANER 334004 (Raj.)

Mobile : 9828777455

ISBN 818927812-6
9788189278120

शेखावाटी के भित्तिचित्रों का सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. रीतेश व्यास

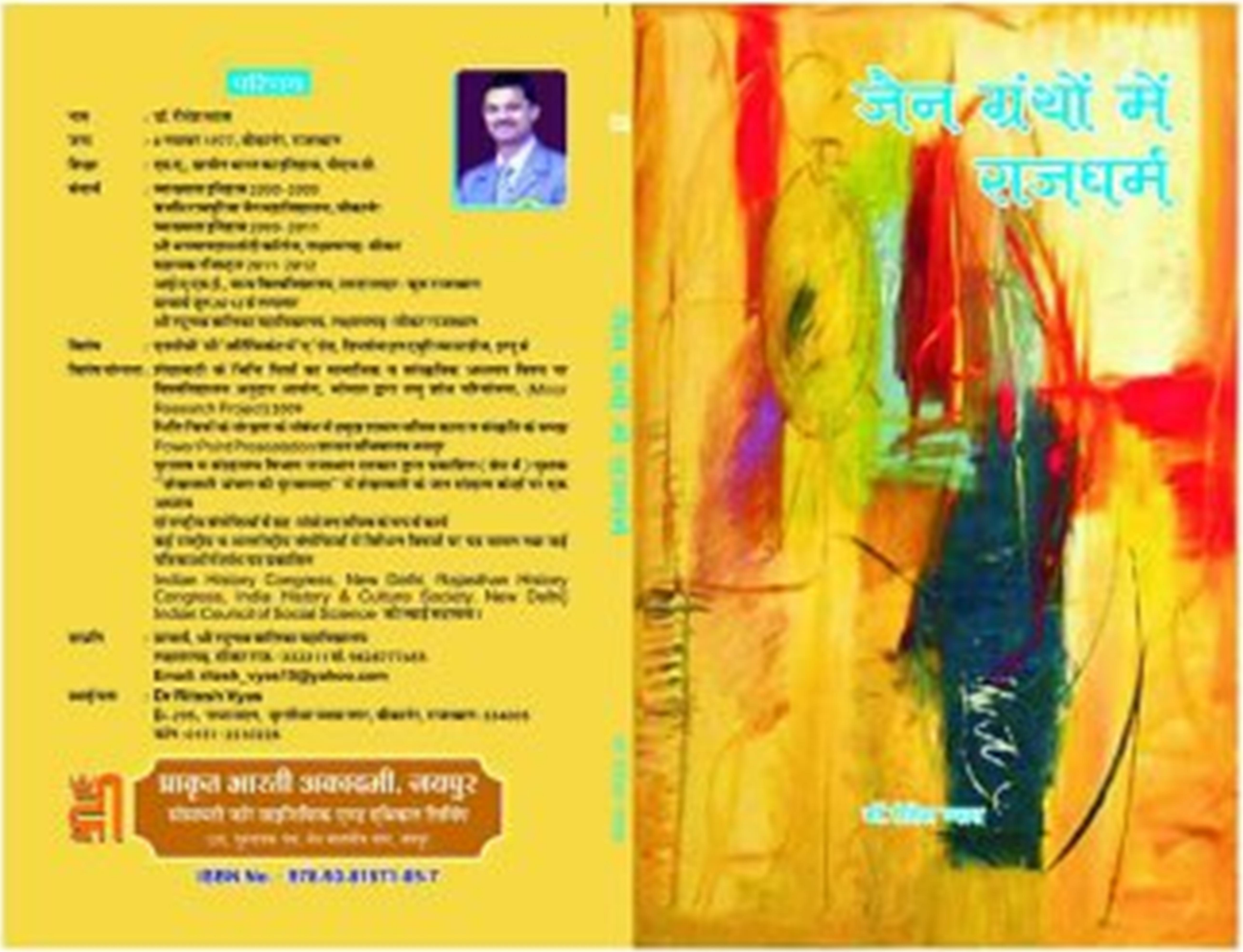
जैन ग्रंथों में राजधर्म
Indian History Congress, New Delhi, Rajasthan History Congress, India History & Culture Society, New Delhi, Indian Council of Social Science
Dr Ritesh Vyas
प्राकृत भारती अकादमी, जयपुर
ISBN No. - 978-93-81571-85-7